ॐ

जुड़ने और जोड़ने के लिए

कान्यकुब्ज वाणी

2018

दीप प्रज्ज्वलन– मुख्य अतिथि, पल्लवी त्रिवेदी, अध्यक्ष जी और डा आर के मिश्रा

कान्यकुब्ज वाणी का विमोचन

मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री वी के दीक्षित जी को स्मृति चिह्न

नन्ही स्वरा का मोहक नृत्य

"सूर्य के रथ में एक ही पहिया है। रथ में सात घोड़े सर्प–वल्गा से नियंत्रित है (नियंत्रण के लिए कोई मजबूत रस्सी नहीं है। सर्प स्वयं स्थिर न रह कर सदैव सरकते रहते हैं)। सारथी अरुण पैरों से विकलांग है और मार्ग निराधार है। फिर भी सूर्य इन न्यूनताओं के बावजूद प्रतिदिन अपार गगन को पार कर जाते है।

इससे सिद्ध होता है कि कार्य की सफलता स्वयं के पौरुष में सन्निहित है, साधनों अथवा उपकरणों में नहीं।"

विषय सूची

1.	प्रार्थना	
2.	I bet YOU did not Know	8
3.	हम सबके अंदर शैतान जिंदा है	9
4.	रायबरेली की माटी की कहानी	11
5.	रामानुज	17
6.	राधानगरी में रमण	23
7.	विटामिन	29
8.	इण्डोनेशिया में हिन्दू वैदिक संस्कृति	37
9.	चिंटू की चिट्ठी	49
10.	विश्व का सबसे सहिष्णु देश–भारतवर्ष	51
11.	ना सबूत है, ना दलील है	57
12.	क्या यौवन रीता हो जाता!	59
13.	कैकेयी	61
14.	काश! वह यहाँ होते	63
15.	बड़ों के पत्राचार	67
16.	How to deal with an Assertive China	73
17.	तुम अपनी राह चुनना	77
18.	श्रद्धांजली	78

अध्यक्षीय सन्देश

अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा 'जुड़ने और जोड़ने' के लिए प्रतिवर्ष होली मिलन समारोह आयोजित करती है। इस समारोह में लड़कियों को स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर करने के उद्देश्य से, अल्प आय वर्ग की ब्राह्मण छात्राओं के शिक्षण हेतु, नगद प्रोत्साहन राशि, साइकिल और वार्षिक फीस की प्रतिपूर्ति की जाती है।

इन गतिविधियों के लिए यह संस्था किसी सरकारी या गैर सरकारी अनुदान पर आश्रित नहीं है। छात्राओं की सहायता हेतु हमारे सदस्य अपने परिजनों के नाम से छात्र–वृत्ति का अनुदान देते रहते है। इसके लिए हम उनके आभारी हैं। वहीं सभा का होली मिलन कार्यक्रम, कार्यकारिणी सदस्यों के वित्तीय योगदान से व संस्था की 'आजीवन सदस्यता शुल्क' राशि (जो पहले रु. 150 थी, वर्तमान में रु. 500 मात्र) के वार्षिक ब्याज से आयोजित होता है। इधर महंगाई बढ़ जाने तथा बैंक के फिक्स्ड डिपाजिट की दरें बहुत कम हो जाने की वजह से होली मिलन कार्यक्रम के आयोजन में कठिनाई हो रही है।

अतः हम अपने सदस्यों से अपेक्षा करते हैं कि इस वर्ष से अधिक से अधिक संख्या में सभा के सदस्य स्वयं बने और दूसरों को भी बनाएँ, तथा होली मिलन समारोह हेतु भी कुछ राशि का सहयोग अवश्य करें।

न्यायमूर्ति दिनेश कुमार त्रिवेदी
6/168, विनीत खण्ड, गोमतीनगर,
लखनऊ–226010

शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं0 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सुशील दीक्षित
योगेश कुमार
पंकज

संदेश

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा, लखनऊ अपनी वार्षिक पत्रिका 'कान्यकुब्ज वाणी' का प्रकाशन वर्ष 2018 में करने जा रही है।

किसी भी समाज के विकास में, उस समाज से संबंधित साहित्य की अहम् भूमिका होती है, इसके माध्यम से समाज के लोगों को अपने सृजनात्मक विचारों को अभिव्यक्त करने का सुअवसर मिलता है। मुझे आशा है कि 'कान्यकुब्ज वाणी' पत्रिका के प्रकाशन से हमें रोचक एवं उपयोगी जानकारियाँ प्राप्त रहेंगी।

मैं अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के समस्त सदस्यों को 'कान्यकुब्ज वाणी' पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देता हूँ और इसकी सफलता की कामना करता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित !

(डॉक्टर आर० के० मिश्रा)

संदेश

ॐ

संपादक महोदय की आत्मीयता के फलस्वरूप विगत कई वर्षो से 'कान्यकुब्ज वाणी' पत्रिका का नियमित पाठक हूँ।

वर्ष में एकबार एक साथ 'कान्यकुब्ज रत्नों' की आभा से आलोकित मंच अन्तर्मन को बरबस पुलकित करता है। इतने रत्नप्रसू यह पावन धरा, भला कैसे सामान्य कैसे हो सकती है– 'नप्रभातरलंज्योतिरुदेति वसुधातलात्।' और उक्ति जैसे चरितार्थ होरही थी– 'पारावार पूरन अपार परब्रहम रासि, जसुदा के कोरै एक ही बार कुरै परी।'

लेखों ने जैसा छुआ–

गुरु शिष्य बहुत ही प्रेरक है। अच्छा होता यदि अंत में लेखक तिवारी जी का पता या मोबाइल नंबर ही संपर्क हेतु दिया जाता।

'राष्ट्र के प्रति निष्ठा' काया ही विचारप्रद! काश इसमे सामग्री–स्रोत भी इंगित होता।

'उफ, वो निगाहें' संस्कारमूल का सिंचन करती भावराशि। साधुवाद।

'जग रोया मैं हँसा' कल्पना की अद्‌भुत उड़ान! पर 'पतली नीली प्रकाश–रश्मि' अध्यात्म जगत् से आई अथवा चिकित्सा जगत् से? एक कौतूहल छोड़ गई , जिसका निराकरण वांछित है।

'कन्तमनइयाँ कौड़ी पईया' लघु कलेवर में भावनामूल में उतारने का सुंदर प्रयास!

'डी एन दुबे उवाच' का कटु यथार्थ को सज्जनभाव से मुखर हुआ साहस। कृपया इस स्तम्भ को धारावाहिक रूप से आगामी अंको में नियमित रूप से चलाते रहें। ऐसे लेख विचारों को मौलिक चिंतन को प्रेरित करते हैं।

'प्राकृतिक वेग एवं स्वच्छता अभियान' वाह भाई! क्या ओज है–व्यथाकथा मुखरता में।

'डा० निःशंक एक बड़े साहित्यकार' बड़ी सच्ची और सार्थक श्रद्धांजलि है।

'श्यामल काया गोरी छाया' अपने में अनूठी प्रस्तुति है। पढ़ने में यह गद्य काव्य सरीखा आनंद देता है। लक्ष्मण के बारे में यह मौलिक लेख है।

'पं गेंदलाल दीक्षित' क्रांतिकारियों की स्रोत परंपरा को शत–शत नमन।

अनकहे भी जो कहना पड़ा।

श्रवण शुक्ल चतुर्थी
विक्रम संवत 2074

'कान्यकुब्ज वाणी' का शुभाषांसी
शत्रुघ्न लाल मिश्रा
मो. 88532 72890

सम्पादकीय

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

भारतीय समाज एक विशाल वट–वृक्ष की भाँति है। इसकी मूल जड़ तो भारत भूमि में हैं, परंतु इसकी स्तम्भ–शाखाएँ (प्रोप–रुट्स) संसार के कोने कोने तक विस्तार पा पल्लवित हो रहीं हैं। ऐतिहासिक बाध्यताओं के कारण इन भारत वंशियों को कहीं कहीं अन्य धर्म स्वीकार करना पड़ा, फिर भी यह अपने मूलधर्म के साथ भी श्रद्धा से जुड़े हैं।

सुदूर पूर्व में स्थित इन्डोनेशिया मुस्लिम बाहुल्य देश है,जिसमे हिन्दू मात्र 2 प्रतिशत हैं। इसके बावजूद इस देश की सैन्य सुरक्षा का नाम 'हनुमान्' (जो संभवतः गुप्तचरी के जनक हैं) है, उनकी वायु सेवा का नाम 'गरुड' है। इण्डोनेशियाई नोटों पर भारतीय देवताओं के चित्र, चौराहों पर रामायण और महाभारत के दृश्य मूर्ति रूप में विद्यमान हैं। वहाँ के लोग अपनी हिन्दू वंशावली पर गर्व करते है।

इन्डोनेशिया की उच्च शिक्षा में अमेरिकन विश्वविद्यालयों का बहुमूल्य योगदान है। अतः कृतज्ञता ज्ञापन हेतु इण्डोनेशिया की सरकार ने शिक्षा और ललित कलाओं की अधिष्ठात्री 'देवी सरस्वती' की एक भव्य प्रतिमा अमेरिका को भेंट की। यह प्रतिमा बाली द्वीप के एक मुस्लिम कलाकार द्वारा गढ़ी गई है। इसमे 'माँ सरस्वती' की प्रतिमा के नीचे विभिन्न जाति, धर्म और राष्ट्रीयता के बच्चे अध्ययन करते दीख रहे हैं। वाणी का यह मुख चित्र क्या हमे 'सेक्युलरिज्म' का वास्तविक मतलब समझाता है?

आशा है कि 'कान्यकुब्ज–वाणी' का यह नवम् अंक सुधी पाठकों को आनंददायक होगा। ऐसी आशा के साथ सम्पादक मण्डल व कान्यकुब्ज सभा की ओर से सभी को होली व नव–संवत्सर की शुभकामनायें।

नोट– अपरिहार्य तकनीकी कारणों से कान्यकुब्ज सभा का वेबसाइट एड्रेस <kanyakubj.in> हो गया है।

सम्पादक
(डॉ0 डी0एस0 शुक्ला)
18/378 इन्दिरा नगर, लखनऊ–226016
ईमेल–dsumeshdp@rediffmail.com
मो0 : 9415469561

When Hitler invaded Poland and started World War II, 500 Polish women and 200 children were put in a ship to save them from Germans. The ship was left in the sea by the Polish Army and Captain was told to take them to any country where they can get shelter. Last message from their countrymen was "if we are alive or survived, then we will meet again."

The ship, filled with five hundred refugee polish women and two hundred children were refused to come in by many European Ports, Seychelles, Aden etc. The ship continued to sail and somehow reached the harbor port of Iran. Yes so far away. There also they did not get any permission. Finally, the ship wandering in the sea reached India and came to then Bombay. The British Governor also refused the ship to port.

When Maharaja of Jamnagar, "Jam Sahab Digvijay Singh" came to know about this ship, he became truly concerned. He allowed the ship to port in his kingdom at a port near Jamnagar. He not only gave shelter to five hundred women but also gave their children free education in Balachiri in an Army School.

These refugees stayed in Jamnagar for nine years till World War II lasted. They were well taken care of. Jam Sahib regularly visited them and was fondly called Bapu by them.

Later these refugees returned to their own country. One of the children of these refugees later became the Prime Minister of Poland. Even today, the descendants of those refugees come to Jamnagar every year and remember their ancestors.

In Poland, the name of many roads in the capital of Warsaw is named after Maharaja Jam Sahib. There are many schemes in Poland on his name. Every year Poland newspapers print articles about Maharaja Jam Saheb Digvijay Singh.

From the ancient times, the message of India वसुधैव कुटुम्बकम् (whole world is a family) and it's tolerance has been well known in the world.

Few people today raise doubt, put question marks on India's tolerance. India will remain a Hindu Indian Culture - Rich ,brave, tolerant, compassionate and genuine humanitarian - plus pro life, pro good values and great respect.

This was an illustrious page from history hardly known to many today even in Indian.

हम सबके अंदर शैतान जिंदा है

एक कथा है कि एक बड़े धार्मिक पादरी जंगल की पगडंडी से चले जा रहे थे। एकाएक उन्हें किसी के कराहने की आवाज सुनाई पड़ी। करुणामय पादरी करुणा कर के उस व्यक्ति के पास पहुँचे। पता चला कि वह शैतान था। खुदा के किसी बंदे या किसी फरिश्ते ने उसका यह हाल किया था। घायल शैतान ने पादरी से सहायता की भीख माँगी।
पादरी ने सोच कर कहा "मैं तो खुदा का बंदा हूँ, जिसे शैतान को दूर भागने का कार्य दिया गया है। फिर मैं इस शैतान को क्यूँ बचाऊँ। शैतान गर मर गया तो पूरे संसार का भला ही होगा।"

इस विचार के चलते, पादरी ने जीवन में पहली बार किसी लाचार और बेबस को मदद करने से मुँह मोड़ा। कुछ दूर चलने के बाद ही पादरी को याद आया कि यदि शैतान वाकई में मर गया तो मेरा तो धंधा चौपट हो जाएगा। उसे इबादत और जनसाधारण को शैतान से बचाने के उपाय बताने के अलावा आता ही क्या था। उसने महसूस किया किया कि यदि शैतान मर गया तो वह और उसकी तरह के हर धर्म के तमाम 'पाखंडजीवी' भूखों मर जाएंगे। वह भूख की ज्वाला से परिचित था। एकदम से शैतान की मदद करने को लौट पड़ा।

परंतु यह क्या– जहाँ उसने घायल शैतान को छोड़ा था वहाँ कुछ भी नहीं था!

तभी उसे अपने सिर के ऊपर कोई काला साया दिखा, जो शीघ्र ही साकार हो उसके सामने आ खड़ा हुआ। ...यह क्या! सामने स्वयं शैतान खड़ा मुस्करा रहा था। एकदम स्वस्थ। उसमे घावों, पीड़ा अथवा निरीहता का लेशमात्र चिह्न नहीं था। पादरी को दुविधा में देख शैतान ने हँसते हुए कहा "पादरी, आश्चर्य मत करो। मैं अवश्य मर जाता यदि तुम मेरी सहायता कर देते। दुखियों पर दया करना और उनकी सहायता करना ही तुम्हारा धर्म है। मगर तुम्हारे मन के शैतान ने तुम्हें मेरे ऊपर करुणा या दया करने से रोका और तुम मुझे मरने के लिए छोड़ गए। परंतु, जैसे ही तुम्हें याद आया कि मेरे न रहने पर तुम्हारी खुद की दुकान बंद हो जाएगी, तुम स्वार्थ और लालच के चलते मुझ पर अनुग्रह करने वापस लौटे। इस प्रकार एक बार फिर, तुम्हारा

भगवान शैतान से हार गया। मगर इस बार खुद अपने ही बंदे से हारा जिसे उसने समाज में अच्छाइयों का ठेकेदार बना रखा है।"

यह कहानी सुनने में अच्छी और मनोरंजक लगती है। परंतु यह कहानी इसके अलावा इस तथ्य की ओर भी इंगित करती है कि– द्रष्टव्य संसार त्रिगुणमयी है अर्थात समस्त संसार सत् रज और तम गुणों से मिलकर ही बना है। यही कारण है कि संसार में कुछ भी और कोई भी ऐसा नहीं हो जो पूर्ण रूप से अच्छा हो अथवा केवल बुरा। सभी में अच्छाई के साथ कुछ बुराई अथवा बुराई के साथ कुछ न कुछ अच्छाई अवश्य होगी। यहाँ तक कि देखा गया है कि,सूक्ष्म मात्रा में विष भी कभी उपयोगी हो सकता है वहीं अमृत भी का आधिक्य अथवा सर्वसुलभता हानिकारक हो सकता है।

यदि हम इसी तथ्य का वैज्ञानिक दृष्टि से अवलोकन करें तो ज्ञात होगा कि ब्रह्मांड सदैव संतुलन की स्थिति में रहता है। प्रत्येक वस्तु का विपरीत अवश्य होता है, यथा यदि प्रकाश है तो अंधकार भी है, सुख है तो दुख भी है, स्वास्थ्य है तो रोग भी है, आकर्षण है तो विकर्षण भी है, बल है तो प्रतिबल भी है। इसी प्रकार यदि ईश्वर सर्वव्याप्त है तो शैतान की भी उतनी ही व्याप्ति है।

आजकल की दुनिया में यदि किसी में 60 अच्छाइयाँ हैं और 40 बुराई तो वह औसत माना जाएगा। यदि भली और बुराई बराबर अनुपात में हैं तो वह वस्तु या व्यक्ति साधारण कहलाएगा। जैसे–जैसे अच्छाइयों का अनुपात बढ़ता जाएगा वह अच्छा, सज्जन और महात्मा या संत श्रेणी में उसकी गणना होगी।

अच्छाई और बुराइयों को नापने का कोई निश्चित मानक या मानदंड नहीं है। यह परखने वाले की मनोदशा और दृष्टिकोण पर भी निर्भर करता है। यहाँ पर परखने वाले का स्वभाव एवं मनोभाव भी उसके द्वारा किए मूल्यांकन को प्रभावित करते हैं। इसमें व्यक्ति के प्रति स्नेह, श्रद्धा, भक्ति जैसे सकारात्मक और स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा की भावना के अलावा नापसंदगी, ईर्ष्या, द्वेष आदि नकारात्मक भावनाएं व्यक्ति के मूल्यांकन को प्रभावित करेंगी।

यही कारण है कि एक व्यक्ति किसी व्यक्ति विशेष के लिए भला तो दूसरे के लिए बुरा भी हो सकता है। यहाँ तक कि महात्मा गाँधी जैसे संत और राम और कृष्ण देवत्व प्राप्त पुरुषों भी आलोचना समय समय पर सुनाई पड़ती है।

मृत्तिकाकथन

रायबरेली की माटी की कहानी

– डॉ. डी.एस. शुक्ला

माटी संभवतः सबसे श्रेष्ठ इतिहासकार है। माटी की कहानी में कोई पूर्वाग्रह या पक्षपात की संभावना नहीं रहती। माटी के लिए रंग, वर्ण, भाषा, या अपने पराये का कोई फर्क नहीं होता। कैसे हो सकता है? सभी तो माटी से ही जन्मे और माटी में समा गए। माटी राजा और रंक, पंडित एवं मूर्ख, गौ और श्वान में कोई फर्क नहीं करती, क्योंकि सभी इसी एक माटी से उपजे और इसी में विलीन हो गए। बड़े साम्राज्य व सभ्यतायें इसी से उपजी और इसी में समा गईं। मिट्टी का होने की वजह से शायद इसे मर्त्यलोक कहा जाता है। किसी जगह की माटी में ही वहाँ का इतिहास छुपा रहता है।

यदि आप रायबरेली के मुंशीगंज की सई नदी के पार वर्तमान रेल के पुल और पुरानी रोड के पुल के बीच की मिट्टी को सूँघें तो आज भी उन स्वतन्त्रता के दीवाने किसानों के रक्त की महक आएगी जो पं० नेहरू के आह्वान पर एकत्र हुए थे और अंग्रेजों की गोलियों का शिकार हुए। परन्तु रायबरेली का मुंशीगंज, जलियाँवाले बाग की जैसी प्रसिद्धि न पा सका क्योंकि तब रायबरेली एक बहुत छोटा जिला था, अथवा वहाँ का मीडिया इतना सशक्त नहीं था। नेहरू जी इस घटना कभी नहीं भूले। आजादी के बाद से आज तक उनके परिवार का कोई न कोई सदस्य रायबरेली से सांसद रहा।

आजादी की इस लड़ाई से यदि हम 1857 के स्वतन्त्रता युद्ध के युग की याद सँजोए रायबरेली की माटी आपको आज के कहारों के अड्डे की ओर ले जाएगी जहाँ क्रांति के दौरान मात्र दो अंग्रेजों की मृत्यु के दंड स्वरूप सैकड़ों लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। अंग्रेज स्वभाव से बर्बर होने के अलावा बनिए भी थे। सो उन्होंने तोप या गोली से उड़ाने जैसे महंगे तरीके न इस्तेमाल कर कर सामूहिक फाँसी जैसा सस्ता रास्ता अपनाया। झुंड के झुंड निर्दोष नागरिकों को हाथी पर लाया जाता पेड़ों से लटकते फाँसी के फंदों से गर्दन बाँध कर हाथी चला दिया जाता था। लोग शहीद हो जाते थे। हाथी पर दूसरी खेप आने पर निष्प्राण शरीर हटा कर इन्हीं फंदों से नए लोग लटका दिये जाते हैं। इस रास्ते आज भी दोनों तरफ बड़े–बड़े पेड़ है। यदि हम पेड़ों की भाषा सुन सकते तो शायद उस काल का कोई पेड़ आज भी सिसकते हुए उन सेनानियों को याद करता सुनाई पड़ सकता है।

डलमऊ जो 'उत्तरवाहिनी' गंगा के कारण इलाके में तीर्थ का दर्जा

रखता है, कभी भर वंश की राजधानी हुआ करता था। नवाबों ने ऐन होली के दिन, जब सभी रंग और भंग की मौज में थे, एकाएक आक्रमण कर सब कुछ नेस्तनाबूद कर दिया। कोई नाम लेवा भी नहीं बचा। तब से आज तक डलमऊ में होली के दिन 'रंगपर्व' नहीं मनाया जाता।

1857 की क्रान्ति के महानायक 'राणा बेनी माधव सिंह' की कर्मभूमि भी यही रायबरेली रही है। कंपनी सरकार के तत्कालीन जनरल व इतिहासकारों ने लिखा है कि मौलवी अहमदुल्ला खाँ, तात्या टोपे और राणा बेनी माधव सरीखे यदि एक आध निःस्वार्थ सेनानी और होते तो प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का परिणाम कुछ अलग होता। स्व० कृष्ण शंकर शुक्ल और रायबरेली के रत्न स्व० पं राम मनोहर त्रिपाठी जी रचित 'बेनी माधव बावनी' (दोनों पुस्तकों का शीर्षक एक था परंतु रचनाकाल में लगभग चार दशकों का अंतर था) राणा की शौर्यगाथा लिख कर अमर हो गईं।

ऐसा कतई नहीं है की रायबरेली की मिट्टी में मात्र रक्त की ही खुशबू है। 'त्रिवेणी' में एक मलिक मुहम्मद जायसी यही के जायस के रहने वाले थे। उनके स्वयं के अनुसार–

जायस नगर मोर अस्थानू। नगरक नांव आदि उदयानू।
तहाँ देवस दस पहुने आएऊँ। भा वैराग बहुत सुख पाएऊँ।।

(जायस जिसका पूर्व नाम उद्यान था, में मेरा जन्म हुआ और यहीं वैराज्ञ सुख पाया) (आखिरी कलाम 10)।

हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली को स्थापित करने वाले आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भी इसी रायबरेली की माटी में ही जन्मे। साहित्यिक भाषा के सौष्ठव व शुचिता के सम्बल होने के अलावा वह नारी शक्ति के प्रवर्तक थे। उन्होंने घर की लक्ष्मी को ही देवी का रूप मान कर अपने मंदिर में त्रिदेवियों के बीच स्थान दिया। हालाँकि उस काल में इसका बहुत विरोध हुआ पर वह अपनी मान्यता से नहीं हटे। काश! आज के स्त्री शक्ति समर्थकों को इस तथ्य का भान हो सके तो वह भी अपने आंदोलन में रायबरेली को इस आचार्य के नाम से जोड़ कर गौरवान्वित महसूस करेंगे। मुझे आश्चर्य है कि यह तथ्य अभी तक जनसाधारण के संज्ञान में क्यों नहीं आया

यहाँ की माटी बताती है कि अंग्रेज रक्त की शुचिता पर बड़ा विश्वास करते थे। वह जानते थे कि भारत की प्रजा अपने राजा पर जान छिड़कती है। इसी लिए बड़े राजघरानों को युद्धसंधि के बहाने देश से विस्थापित कर देश के पिछड़े और अंजाने भाग में बसा दिया करते थे। इससे उनका जुड़ाव वहाँ की जनता से नहीं हो पता था। जितना बड़ा राज्य उसे मुख्य धारा से उतनी ही दूर बसाया जाता। राजा खजूरगाँव, तिलोई आदि के महल 70 के दशक तक मुख्य राज–मार्ग से कोसों दूर स्थित थे।

वहाँ सबसे बड़ी किलेनुमा बनी बड़ी सी कोठी 'लाल साहब की कोठी' के नाम से जानी जाती थी। पंजाब के राजा रंजीत सिंह के पराभव के बाद दिलीप सिंह के पौत्र को इसी कोठी में बसाया गया था। उनकी देहयष्टि, उदार स्वभाव, व बल की गाथाएँ आज भी प्रचलित हैं। कहते हैं इन घरानों को अपने पुत्रों के विवाह हेतु लिए भी गवर्नर की अनुमति लेनी पड़ती थी। गवर्नर किसी बड़े राजघराने से वैवाहिक सम्बन्ध न होने पाये, इसका विशेष ध्यान रखते थे। अंग्रेजों की इस नीति का प्रभाव होता था कि साढ़े छः फीट ऊंचाई व गैंडे जैसी बलिष्ठ देहयष्टि वाले राजपुरुष दो तीन पीढ़ियों बाद ही किसी भी तरह जनसाधारण से अलग नहीं दिख पाते थे। उनमें वह शौर्य, रक्त की दहक या जुझारू क्षात्र बल नहीं रह जाता था कि उस साम्राज्य का विरोध कर सकें जिसमें कभी सूरज नहीं अस्त होता था। उन्हें सेना रखने की अनुमति नहीं थी। राजघरानों पर कोई शासन व्यवस्था की जिम्मेदारी न होने से वह रागरंग मे ही लिप्त हो जाते थे। यह भी उनके पतन का एक बहुत बड़ा कारण था।

कहते हैं कि रायबरेली का एक राज परिवार राणा प्रताप के वंशज था। वे राणा की प्रतिज्ञा ''जब तक विदेशियों से मात्रभूमि स्वतंत्र नहीं हो जाती मैं चटाई पर ही लेटूँगा'' के अनुपालन में अपने पलंग के गद्दे के नीचे चटाई बिछाते थे। भारत के स्वतंत्र होने के बाद एक स्वतन्त्रता दिवस पर पं० नेहरू ने उन्हें आमंत्रित किया कि वह दिल्ली आ कर देख लें कि अब भारत विदेशियों की दासता से मुक्त है। राजा साहब के वहाँ से वहाँ से संतुष्ट लौटने के बाद ही उनके पलंग से चटाई हटाई गई।

जहाँ एक ओर ज्यादातर राजघराने जनसाधारण की समस्याओं से उदासीन थे वहीं कुछ ने सामरिक शक्ति न होने के बाद भी अपनी रिआया का बहुत ध्यान रखा। राज घरानों के सहयोग से साहित्य के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई।

एक राजा साहब ने रामचरितमानस के पाठ में 'नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि" (अनेक वेद, पुराण शास्त्र–सम्मत, तथा रामायण में वर्णित तथा कुछ अन्यत्र से उपलब्ध राम कथा को ही तुलसीदास ने अपनी वाणी में कहा) सुन कर केवल इस श्लोक पर शोध हेतु काशी से तमाम विद्वान् बुलवाए। इन विद्वानों के कई वर्षों के अथक प्रयास के फलस्वरूप एक संकलन का निर्माण हुआ जिसमे मानस की प्रत्येक चौपाई का संदर्भ (क्रासरिफरेंस) किस प्राचीन ग्रंथ में पाया गया, का उल्लेख है। यह ग्रंथ बीस खंडों में रायबरेली के प्रतिष्ठित पुस्तकालय शारदा–सदन में उपलब्ध है। मेरा दुर्भाग्य है कि मैं अपने 6 वर्ष के रायबरेली के कार्यकाल में इस दुर्लभ ग्रंथ के दर्शन से वंचित रह गया।

20वीं शताब्दी के 20 के दशक में रायबरेली स्टेशन से दिन भर में मात्र एक दो ट्रेनें ही गुजरती होंगीं। स्टेशन मास्टर, एक सहायक और कुछ खलासी ही स्टेशन का पूरा स्टाफ थे। साफ सुथरी चमकती हुई फर्श वाला रेल्वे स्टेशन एक अति आधुनिक स्थान था, जहाँ नगर के संभ्रांत लोग कभी–कभी चहल कदमी के लिए भी आ जाते थे। पढ़े लिखे स्टेशन मास्टर से वार्तालाप, उसकी सुख–सुविधाओं का ध्यान रखना इन संभ्रांत लोगों के व्यक्तित्व का हिस्सा था।

एक दिन शहर के एक रईस पं0 गया प्रसाद शुक्ल, जो बहुत बड़े वकील होने के अलावा नगरपालिका के चेयरमैन भी थे, ऐसी ही चहल कदमी करते स्टेशन पहुँचे। वहाँ उनकी मुलाकात प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले एक प्रौढ़ व्यक्ति से हुई। बातचीत के दौरान चेयरमैन साहब को पता चला कि उक्त सज्जन अपने सक्षम हो गए पुत्रों के व्यवहार से पीड़ित होकर, खिन्न मन से काशी प्रवास को जा रहे हैं। चेयरमैन साहब ने पहले उन्हें समझाने का प्रयास किया कि मामूली बात पर घर छोड़ना उचित नहीं है। परंतु वह महानुभाव अपनी टेक से नहीं हटे। अंत में चेयरमैन साहब ने उनसे कहा, ''भाई आप मात्र अपने बच्चों से ही दूरी चाहते हैं कि पूरे शहर से ही क्रुद्ध हैं? आप शहर मत छोड़ें। आप मेरी कोठी में मेरे परिवारी जन कि तरह निवास करें। यदि वहाँ भी आपका क्षोभ शांत न हो तो मैं स्वयं आपके काशी जाने का प्रबंध करवा दूँगा।" इस प्रकार वह उन आगंतुक को अपने सुरजूपुर स्थित आवास पर साग्रह ले आए। यह रूठे हुए महानुभाव थे ठाकुर भगवान बक्श सिंह जी। ठाकुर साहब स्वयं एक विद्वान् होने के साथ बेहतरीन कवि भी थे। चेयरमैन साहब के छोटे भाई पं रामावतार शुक्ल 'चातुर' भी काव्य प्रेमी और स्वयं विख्यात कवि थे। इन दो कवियों की वजह से सुरजूपुर काव्यप्रेमियों का केंद्र बन गया। कालांतर में इन्हीं के द्वारा रायबरेली के बहुश्रुत 'चातुरमण्डल' की स्थापना हुई। इसी समय बछरावां में पं0 गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' जी द्वारा स्थापित 'सनेही मण्डल' भी काव्य क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध हुआ। इन दोनों काव्यमंडलियों के प्रभाव से तमाम विख्यात कवि उपजे, और साहित्य में बड़ा नाम कमाया। इन दोनों संस्थाओं पर हिन्दी साहित्य में कई शोध पत्र लिखे गए। पं0 गया प्रसाद शुक्ल जी आजीवन नगरपालिका के चेयरमैन रहे। उनके काल में नगरपालिका दफ्तर की बिल्डिंग का निर्माण हुआ था। 80 के दशक तक वह बिल्डिंग तथा उस पर लगी एक बहुत बड़ी घड़ी पर लिखी इबारत "BUILT IN THE REGIME OF RAIBAHADUR PANDIT GAYA PRASAD SHUKLA" उनकी याद दिलाती रही।

जैसा कि बताया गया कि शुक्ल जी दीवानी के सबसे अच्छे वकील थे, वहीं उनके समकालीन एक श्री श्रीवास्तव साहब भी बड़े उच्च कोटि के

वकील थे। शहर के सभी महत्वपूर्ण केसेज में यही दोनों वकील आमने–सामने होते थे और जबतक केस का निर्णय नहीं हो जाता तब तक यह बताना मुश्किल होता था कि कौन वकील केस जीतेगा। ऐसे में एक बहुत मनोरंजन घटना हुई। शुक्ल जी के एक बहनोई एक दीवानी का वाद लेकर आए और बोले कि यह मुकदमा तुम लड़ दो। शुक्ल जी ने केस सुनने के बाद उन्हें सलाह दी कि तुम श्रीवास्तव साहब के पास जाओ और मेरे रिश्ते का परिचय देकर उन्हीं से यह केस कराओ। बहनोई साहब श्रीवास्तव वकील साहब के पास गए। वकील साहब ने स्वयं के बहनोई की भाँति उनका सत्कार किया और पैरवी कर उन्हें केस जीता भी दिया। बहुत इसरार करने पर भी उन्होंने फीस नहीं ली। जब पंडित जी वकील साहब को धन्यवाद देकर चलने लगे तो वकील साहब ने एक चुटकी लेते हुए कहा, ''पंडित जी! एक बात मेरी समझ के बाहर है कि आपके साले, जो इतने बड़े वकील हैं, ने स्वयं आपका केस न करके मेरे पास क्यों भेज दिया?"

वकील साहब के इस कथन से पंडित जी क्षुब्ध हो गए। उनके दिमाग में कीड़ा बैठ गया। जीत की खुशी काफूर हो गई। जले–भुने सुरजूपुर पहुँचे। साले ने जैसे ही बधाई दी वह बरस पड़े, ''गया प्रसाद, इत्ते बड़े वकील होई के तुम खुद हमार केस काहे नहीं कीन्हेव। यही मारे ना कि हमसे फीस नहीं लई सकत रहेव। फोकट क केस करे के तईं दूसरे पर डाल दीनहेव?" शुक्ल जी पहले तो बहुत हँसे। बोले ''पाहुने गुस्साव न। वकील यही तरा दिल म संशय डारि के अदालत म केस जीतत है। यहए बानगी तुम्हार वकील तुम का दिखाईस।"

फिर समझाते हुए बोले, ''अच्छा यह बताओ अगर हम तुम्हार केस करित तो दुसरी पार्टी जो मालदार और तुम्हरी ही तरा रसूखदार है शर्तिया श्रीवास्तव क ही तो वकील करत।''

पाहुने ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"श्रीवास्तव बहुत अच्छे वकील हैं। ऐसी हालत म तुम केस हार भी सकत रहेव। मगर जब तुम उनहीं क वकील कई लिहयो और हम तुम्हारे खिलाफ उतरब न। दूसर कौनव वकील श्रीवास्तव क हरा नहीं सकत और तुम्हार जीत पक्की होई गै। वुई हमरे रिसते ते तुमते मजाक किहिन है। तुम भोलेपन म समझि नहीं पाएव ओ गुस्साय गएव।'' (उस जमाने सभी लोग परिवार में आपस में अवधी में ही बात करते थे)। बहनोई साहब लज्जित हुए और क्षमा कर संतुष्ट अपने घर लौट गए।

ऐसा विनोदी और बड़प्पन भरा व्यवहार था रायबरेली वासियों का। यह परंपरा आज भी जीवित है।

नव संवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर विश्वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत
मेडिसिन कम्पनी

शहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखनऊ

विशेषता :

जो दवाएँ शहर की अन्य दुकानों पर उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : 9336666322,0522–6568011
पंडित जी (तिवारी जी) का अंग्रेजी दवाखाना

रामानुज

– तिलक शुक्ला, रायबरेली

रघुपति कीरति बिमल पताका। दंड समान भयउ जस जाका॥

देवासुर संग्राम में देवताओं की विजय में पराक्रमी राजा दशरथ का बहुत योगदान था। दशरथ के शौर्य से ही देवगण असुरों से लगभग हारा युद्ध जीत सके। यह सत्य है कि राजा दशरथ को इन्द्र अपने सिंहासन पर आधा स्थान देकर बैठाते थे। इससे देवताओं और मानवों में दशरथ की कीर्ति और सम्मान तो बढ़ा, परंतु वह स्वयं असुरों की आँख का काँटा बन गए। असुर इन्द्र से अधिक दशरथ से वैर मानने लगे। उनका मानना था कि दशरथ के रहते हुए वे अपने चिर प्रतिद्वंद्वी देवताओं, खास कर विलासी इन्द्र से प्रतिशोध नहीं ले सकते। उनके विजय मार्ग में अयोध्या सबसे बड़ी रुकावट थी, क्योंकि दशरथ के रहते रहते अयोध्या सचमुच अयोध्या थी।

कोई भी जाति हमेशा विजयी या सदैव विजित ही नहीं रह सकती। इसका आभास आर्यावर्त में भी परिलक्षित होने लगा था। सुदूर भरतखंड के दक्षिण में समुद्र के बीचोंबीच एक द्वीप लंका में असुरों का एक नया नायक उभर रहा था। वह ऋषि विश्रवा और राक्षस राजकुमारी केकसी का पुत्र रावण था। अपने अजेय पराक्रम और अपरिमित महत्वाकांक्षा से वह बड़ी सरलता से राक्षसों का नायक बन गया। ऋषि पुत्र होने के कारण वह वेदज्ञ और नीतिनिपुण भी था। उसका सौतेला भाई कुबेर यक्ष संस्कृति का नायक था और देवताओं का सहयोगी था। कुबेर के देवताओं के सहयोगी होने के नाते सम्पूर्ण राक्षस जाति कुबेर से द्वेष मानती थी। अतः रावण को कुबेर के विरुद्ध राक्षसों को एक सेना के रूप में तैयार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। एक रोज उसने कुबेर को संदेश भेजा कि उनका छोटा भाई रावण उनको प्रणाम करने आना चाहता है। सौतेला ही सही, पर भाई होने के नाते कुबेर ने उसे बड़े प्रेम से महल में धूमधाम से स्वागत किया। वैसे भी रावण अपनी वीरता एवं शौर्य के कारण प्रसिद्ध हो चुका था। उसका स्वागत न करना आपदा को निमंत्रण देना था। सो कुबेर ने भी उसे पापग्रह की भाँति पूजा अर्चना से प्रसन्न और शांत रखने का उपक्रम किया था।

रावण अपने चुने हुए साथियों के साथ लंका के द्वार पर पहुँचा। लंका के सेनापति ने उसका स्वागत किया। यह भ्रातृ स्नेह न होकर मात्र औपचारिकता हुई। वह समझ गया कि यह सैनिक स्वागत तो मात्र दिखावा

है। जरा सा भी संशय होते ही उसे और उसके साथियों को कैद किया जा सकता है। परंतु वह शांत रहा।

राजदरबार में उसने कुबेर को विनम्रता से प्रणाम किया। कुबेर ने सिंहासन से उतर कर रावण को भाई की भाँति गले लगाया। जैसे जैसे दिन बीतता गया रावण की विनय से कुबेर आश्वस्त होता गया। रात होते होते रावण कुबेर का पूर्ण विश्वास जीत चुका था। यही कारण था कि रात्रि विश्राम के लिए उसे निकट सम्बन्धी कि भाँति दलबल सहित राजमहल में ही टिकाया गया।

परंतु आधी रात बीतते ही राजमहल में कोहराम मच गया। रावण के उद्भट सैनिकों ने सुरा के नशे में झूमते हुए सभी यक्ष प्रहरियों को बंदी बना लिया। जिन्होंने प्रतिरोध किया उन्हें बड़ी निर्दयता से मार दिया गया। मद्यप कुबेर की तंद्रा रावण की गर्जना से टूटी। उसने पाया कि रावण उसके पलंग पर पैर रखे खड़ा था। रावण का विशाल खड्ग उसके सीने पर था। कोई भी अनुचित प्रयास करने पर तत्क्षण खड्ग सीने से पार हो सकता था। कुबेर का नशा हिरण हो गया। उसे समझने में देर नहीं लगी कि उसने अग्नि को अपने अंक में लेकर बड़ी भूल कर दी। वह अब बंदी था। रावण के एक सैनिक ने कुबेर को बड़ी धृष्टता से उठाया और राजमहल की प्राचीर पर ले जा कर खड़ा कर दिया। रावण अपने खड्ग के साथ उसके पीछे चल रहा था। प्राचीर के नीचे लंका की जनता और यक्ष सेना खड़ी थी। उनको राजमहल के अंदर विप्लव का भान हो गया था। वह सब राजमहल का मुख्य द्वार तोड़ने का प्रयास कर रहे थे। तभी बादलों की गर्जन की तरह रावण की आवाज सबके कानो में पड़ी।

"लंका पर अब राक्षसराज रावण का आधिपत्य है। लंका अब राक्षसों की राजधानी बन चुकी है। लंका वासियों से हमारा कोई वैर नहीं है। उनकी सुरक्षा का दायित्व अब रावण का है"। कुछ रुक कर उसने सैनिकों को संबोधित किया "यक्ष सैनिकों, तुम्हारा स्वामी अब मेरी करुणा पर जीवित है। सौतेला ही सही, पर यह मेरा भाई तो है ही। मैं इसे जीवन दान दे दूँगा। मगर यदि तुमने हमारा जरा भी प्रतिरोध करने का प्रयास भी किया तो सबसे पहले तुम्हारा राजा मारा जाएगा। तुम्हारे शस्त्रागार मेरे सैनिकों के कब्जे में है। तुम अधिक प्रतिरोध न कर पाओगे। यक्षों की भलाई इसी में है कि वह आत्मसमर्पण कर दें। केकसी पुत्र रावण का वचन है कि तुम्हें जीवित लंका से जाने दिया जायेगा। तुम्हारे लंका छोड़ने के उपरांत कुबेर को भी स्वतंत्र कर

दिया जायेगा।''

सैनिक स्तब्ध थे। एक सेना नायक ने प्रश्न करने का साहस किया "हम यह कैसे मान लें कि हमारे लंका छोडने के बाद तुम हमारे स्वामी कुबेर को छोड़ ही दोगे। यह भी संभव है कि हमारे जाते ही तुम हमारे राजा का वध कर दो।"

नायक का वाक्य पूरा ही हुआ था कि रावण के हाथों में गति हुई। कुबेर देख भी नहीं पाया रावण ने कब शूल हाथ में लिया और कब फेंका। शूल नायक के सीने को भेद कर जमीन में जा गड़ा था। रावण का लाघव और शक्ति देख कुबेर के घुटने कमजोर पड़ गये। वह प्राचीर पर ही ढुलक गया।

रावण की नृशंसता का अभीष्ट असर हुआ। सेना ने अस्त्र डाल दिये। लंका की प्रजा को 'लंका पति रावण की जय' का घोष करना पड़ा।

यक्ष सेना सकुशल लंका से निकल गई। पर कुबेर को रावण ने अपने पिता विश्रवा के अनुरोध पर ही छोड़ा। कुबेर भाग कर देवताओं की शरण में कैलाश में जा छिपा।

कुबेर का पीछा करते हुए रावण हिमालय तक गया। वह भारत खंड के आर्यावर्त से होकर ही वह हिमालय पहुँच सकता था। उसने आर्यावर्त के दो महत्वपूर्ण राज्य अयोध्या और मिथिला के बीच का मार्ग चुना। मिथिला के राजा जनक तो विदेह थे, उनमें राज्य संवर्धन की लिप्सा का पूर्ण अभाव था। दशरथ भी अब युवा नहीं रह गए थे, अतः एक भगोड़े यक्ष के लिए व्यर्थ में झगड़े में नहीं पड़ना चाहते थे, सो रावण को इस मार्ग में कोई प्रतिरोध नहीं मिला।

असुरों के सबसे पुराने शत्रु देवता उसका अगला लक्ष्य थे। रावण का यह कुबेर विजय का अभियान देवताओं के विरुद्ध प्रयाण की मात्र प्रस्तावना थी, देवलोक के मार्ग का सामरिक सर्वेक्षण था। कुबेर विजय से लौटते में वह इस मार्ग में मिथिला और अयोध्या के बीच अपने सैनिक स्कंधावार बनाना नहीं भूला। भविष्य के अभियानों के लिए निरापद बनाने व लंबे युद्ध की अवस्था में खाद्य व सामरिक आपूर्ति यह स्कंधावार रावण को बहुत लाभकर सिद्ध होने वाले थे। अपने भाई कुंभकर्ण और वीरपुत्र मेघनाद की सहायता से देवलोक विजय के बाद अयोध्या और मिथिला के बीच स्कंधावारों में स्थित रावण के यह सैनिक दोनों राज्यों की सीमाओं को नदी की धारा के भाँति धीरे धीरे काटने लगे थे।

ऐसी राजनीतिक परिस्थितियों में बुढ़ापे की ओर अग्रसर होते राजा दशरथ के निःसंतान होना स्वयं राजा के लिए और उससे भी अधिक उनकी प्रजा के लिए चिंता का पर्याप्त कारण था। यदि राजा बगैर उत्तराधिकारी के मर जाता है तो सिंहासन के लिए तमाम प्रत्याशी खड़े हो जाते हैं। षड्यंत्र, भितरघात का दौर चल पड़ता है। सेना में भी कई सेनापति हो जाते हैं। इन सबका खामियाजा प्रजा को भुगतना होता है। राज्य कमजोर होने पर आक्रांताओं के आक्रमण की आशंका प्रबल हो जाती है। इन सबके ऊपर रावण की विश्व–विजय का स्वप्न अयोध्या के लिए ही नहीं पूरे भरतखंड की चिंता का विषय था।

ऐसी परिस्थितियों में चैत्र मास, शुक्लपक्ष की नवमी को राजा दशरथ पत्नी कौशल्या के पुत्र उत्पन्न होने की सूचना से इक्ष्वाकु वंश में ही नहीं, अयोध्या की प्रजा में भी हर्ष का सागर उमड़ उठा। जो विस्तारवादी राज्य निपूते राजा के मृत्यु की आशा लगाए बैठे थे, उनकी आकांक्षाओं पर तुषारपात हो गया। रावण की भौं में भी बल पड़े। उसने अपने स्कंधावारों को दोनों राज्यों के विरुद्ध आतंकी घटनाओं को तेज करने का संदेश भेजा।

भगवान देता है तो झोली भर कर देता है। कालांतर में दशरथ की रानी कैकेई के एक और सुमित्रा के दो जुडवा पुत्र हुए। खुशी में इतना चंदन, कुमकुम उड़ा कि अयोध्या की वीथियाँ सुरभित और रंगीन हो उठी। बसंत ऋतु में ही दीपावली मना कर प्रजा ने अपना हर्ष व्यक्त किया। आश्रित और मित्र राज्यों से उपहार और बधावे आये।

मिथिला राज्य से भी बधाई आई।

क्षत्रियों में मृगया या आखेट का बड़ा महत्व होता है। मृगया से शारीरिक श्रम के अलावा अस्त्र–शस्त्र ज्ञान का प्राकृतिक धरातल पर व्यवहारिक प्रयोग करने का अवसर मिलता है। प्रारम्भ में धरती पर खड़े होकर भागते हुए आखेट पर संधान का अभ्यास, उसके बाद अश्व दौड़ाते हुए शर संधान के प्रायोगिक ज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। शिष्यों के इन विधाओं में निष्णात होने पर ही गुरु उन्हें एक टोली के रूप में आखेट हेतु जाने की अनुमति देते थे। ऐसी ही स्वतंत्र आखेट पर निकले एक दिन शत्रुघ्न ने कहा कि दूर से ही हिरणों को शर संधान के बजाय हम उन्हे जीवित ही पकड़ने का प्रयास कर तो वह संभवतः हमारी शक्ति का श्रेष्ठतम परीक्षण होगा। सभी मान गए। राम बड़े भाई का भूमिका में आ गये, "वयस्क नर हिरण एक भैंसे के

समान बलशाली होता है। उसके सींगों का आकार उसके शरीर के आकार से भी बड़ा हो सकता है। उससे सावधान रहने की आवश्यकता होगी। अतएव दोनों लघु भ्राता लक्ष्मण और शत्रुघ्न मेरे और भरत के संरक्षण में ही मृग को पकड़ने का प्रयास करेंगे।" भाइयों ने सिर हिला कर सहमति जताई।

चारों कुमार एक बड़े मृग झुंड का पीछा कर रहे थे। उनके लक्ष्य पर झुंड के दो सबसे शक्तिशाली नर हिरण थे। अश्वों की गति के साथ हिरणों की भी गति तेज होती गई। अश्वारोहियों को अति निकट जान पूरा झुंड एकाएक दो भागों में बँट गया। उनके लक्षित मृग एक एक झुंड के साथ भागे। हिरणों की नैसर्गिक बुद्धि जानती थी कि आखेटकों का लक्ष्य अधिकतर सबसे बलवान नर ही होते हैं। अतः दोनों नर अलग–अलग झुंड बना कर कमसे कम एक की रक्षा करना चाहते थे। यह देख बगैर किसी पूर्व निश्चित युक्ति के चारों राजकुमार भी दो दलों में बँट गये। राम के पीछे लक्ष्मण और भरत का अनुगमन शत्रुघ्न ने किया।

यहीं से राम–लक्ष्मण और भरत–शत्रुघ्न की सुप्रसिद्ध जोड़ी बन चुकी थी।

धीरे–धीरे राम का अश्व चिह्नित नर के करीब पहुँचने लगा। लक्ष्मण राम के कुछ ही पीछे थे। एकाएक राम ने अश्व को एड़ लगाई और हिरण के बराबर आ कर बाएँ हाथ से उसके सींगों से पकड़ लिया। पीछे लक्ष्मण सतर्क थे। राम ने अश्व की वल्गा खींच कर धीरे–धीरे अश्व की गति कम की। हिरण की गति भी सींग से पकड़े हुए होने से गति कम हो गई। राम ने बलपूर्वक सींगों को दाब कर हिरण का मुँह पृथ्वी पर दबा दिया और अश्व से उतर कर खड़े हो गये। हिरण अबतक घुटनों के बल बैठ चुका था, उसको प्रतिरोध समाप्त हो गया। वह पूर्ण समर्पण की मुद्रा में था।

तभी भरत और शत्रुघ्न आते दिखे। शत्रुघ्न की प्रसन्न मुद्रा से लग रहा था कि उनका अभीष्ट हो चुका। राम ने लाचार मृग को जीवन दान देते हुए छोड़ कर अपने आए हुए भाइयों कि ओर से मुड़े ही थे कि.....

"अरे...अरे..." भरत की चेतावनी भरा स्वर गूँजा।

समर्पण की मुद्रा में निरीह बना नर–मृग राम की पीठ फिरते ही अचानक आक्रामक हो उठा। वह सींग झुका कर राम पर पीछे से आक्रमण करने वाला ही था। राम की पीठ मृग की ओर थी, अतः वह आसन्न संकट को नहीं जान सके...कि एक बार फिर सबके मुँह से आवाज निकली अरे...! आवाज में विस्मय था, चिंता थी।

इसके पहले कि नर मृग राम तक पहुँचता कि लक्ष्मण अपने अश्व से एक ही छलांग में नर–मृग को सींगों से पकड़ लिया था। मृग हिंस्र हो उठा। उसने पूरे बलसे सींगों को ऊपर उछाला। लक्ष्मण का भार कम होने के कारण वह भी ऊपर उछले, पर सींगों को दृढ़ता से पकड़े रहे। हिरण की उछाल में हवा में ही अपने को संतुलित करते हुए पैंतरा बदल कर वह हिरण की पीठ पर धप्प से बैठ गये। लक्ष्मण ने पूरी ताकत से अपनी बलिष्ठ टांगों से हिरण को दबाया। हिरण साँस घुटने से शक्तिहीन होकर अगले पैरों के घुटने के बल आ गया। परंतु लक्ष्मण का क्रोध अभी भी शांत नहीं हुआ.... राम भइया पर आक्रमण....! वह फिर धधक उठे। बाएँ हाथ से उन्होने हिरण के विशाल सींगों को आगे की ओर ठेला..... तड़ाक की आवाज से नर हिरण का विशाल सींग सिर के पास से टूट गया। राम ने लक्ष्मण को संयमित किया। हिरण अचेत हो गया था।

भरत ने आगे बढ़ कर हिरण की पीठ से लक्ष्मण को उतारा– "यह क्या किया लक्ष्मण, शक्ति का आवश्यकता से अधिक प्रयोग वर्जित है"।

लक्ष्मण फुँफकारे "तो उसने राम पर आक्रमण क्यों किया?" लक्ष्मण के स्वर में शेषनाग ऐसी फुँफकार थी।

"तो क्या हुआ पशु तो मात्र पशु ही है" भरत ने समझाने का प्रयास किया। पर यह क्या। लक्ष्मण बड़े भाई के सामने तन कर खड़ा हो गया। एकाएक वह विशालकाय लगने लगा, उसने आक्रामक भाव से भरत की आँखों में देखते हुआ कहा "पशु हो या और कोई, राम भइया का अनिष्ट चाहने वाले को मैं जीवित नहीं छोडूंगा। वह चाहे जो भी हो।"

भरत लक्ष्मण को एकाएक हिंस्र देख कर हतप्रभ थे। तभी राम ने लक्ष्मण के कंधों पर हाथ रखा "शांत लक्ष्मण, शांत। तुम्हारा प्रतिकार तो पूर्ण हो गया। भरत तुम्हारा बड़ा भाई है।"

लक्ष्मण का रौद्र रूप शांत हो गया। बड़वानल पर जैसे वर्षा हो गई हो। लक्ष्मण ने प्रकृतिस्थ होते हुए राम को प्रणाम किया। चारों भाई वन से लौट चले।

–उपन्यास 'रामानुज' की पहली कड़ी

राधानगरी में रमण

–डॉ. एम.सी. द्विवेदी
पूर्व डीजीपी उ.प्र.

यदि यात्रा को उत्सव बनाना है, तो समूह में यात्रा करो। मेरी यात्रा वृंदावन की थी और समूह महामना मालवीय विद्यालय के योगकेन्द्र के साधकों एवं साधिकाओं का था। हमारा योगकेंद्र पूर्णतः अनुशासित होते हुए भी उत्सवप्रिय है। वसंत ऋतु की सुहानी दोपहरी में 26 मार्च को हम बीस व्यक्ति, दस साधिकायें, आठ साधक एवं एक बालक लखनऊ जयपुर एक्सप्रेस के ए. सी. थ्री डिब्बे में मथुरा के लिये सवार हुए थे। सवार क्या हुए थे, डिब्बे में ऐसा तूफान ला दिया था जैसे पूरा डिब्बा अकस्मात् दोनों नाक से भर्त्सिका प्राणायाम करने लगा हो। वह भी बाबा रामदेव की भाँति भुजाएँ पूरी उठा उठा कर। दूसरे यात्री साधकों के इस आकस्मिक हमले से सकपका गए थे, और उनकी जान में जान तब आई थी, जब निकटता का आनंद उठाने के उद्देश्य से हम सब दो ही कम्पार्टमेंट्स में ऐसे समा गये थे जैसे बोरों में ठुसे हुए गेहूँ। फिर कुछ क्षण को हम शांत हो गये थे, जैसे भर्त्सिका के उपरांत श्वासें सामान्य कर रहे हो। शांत स्वभाव के सत्तर वर्षीय सोनकर जी ने अवश्य अपनी पत्नी के साथ हम सब से अधिकतम दूरी की दो बर्थें लीं थीं, जिस विषय में सीमा बाजपेयी जी ने अपनी 'सुविचारित' राय दी थी कि वह अपनी पत्नी के साथ निर्बाध हनीमून मनाने के लिये हमसे दूर जमे हैं।

गाड़ी अभी मानकनगर स्टेशन भी पार नहीं कर पाई थी कि सीमा जी ने 'समय बिताने के लिये करना है कुछ काम, शुरू करो अंताक्षरी लेकर हरि का नाम' गाना प्रारम्भ कर दिया था। फिर बिना कुछ कहे ही मेरे कम्पार्टमेंट में आमने–सामने बैठे साधकों में अंताक्षरी प्रतियोगिता प्रारम्भ हो गई थी, जिनकी तालियों का उल्लास रेल के वेग के साथ बढ़ता रहा था। मैं आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता से देख रहा था कि सीमा जी के अतिरिक्त विद्या जी, लता मेहरा जी, कंचन सोनी जी, तरु भंडारी जी, नीरजा द्विवेदी जी आदि साधकों के पास सिनेमा के गानों का अथाह भंडार था। रंजना जी न केवल गायन में सिद्धहस्त थीं वरन् नृत्य की मुद्राओं में भी निपुण थीं, जिनका वह मनोहारी प्रदर्शन कर रहीं थीं। मैं भी बीच–बीच में उस तरह हाँक लगा देता था जैसे कव्वाली गाने वालों के पिछलग्गू बीच–बीच में मुख्य गायक के कुछ बोल दोहरा देते हैं। चायपान, टी.टी. के आगमन अथवा बालक अक्षय के हम लोगों के बीच कभी यहाँ कभी वहाँ ठुँस जाने के प्रयत्न से उत्पन्न व्यवधान के

अतिरिक्त यह सिलसिला लगभग अबाध गति से चलता रहा था। गायकों के थक जाने पर बी. जी. पी. अर्थात बालगोविंद पालीवाल जी अपना 'व्हाट्सऐप' खोलकर मजेदार चुटकुले सुनाने लगते थे। उन चुटकुलों में से एक छात्र द्वारा रामायण का अवधी में प्रस्तुत सारांश गजब का था। इस प्रकार गाते बजाते हम लोग रात्रि 10 बजे वृंदावन के सुखधाम भवन में पहुँच गये थे और पूर्व–आदेशित सुस्वाद भोजन प्राप्त कर सो गये थे।

प्रातः जब मेरी आँख खुली थी तब मेरे कमरे के पीछे के उपवन से मोरों की 'पिहों–पिहों' की आवाज आ रही थी। कुछ देर पश्चात तीतरों की प्यारी सी आवाज भी सुनाई दी थी और मेरी पत्नी नीरजा मुदित होकर बोलीं, 'कितने दिन बाद तीतरों के बोलने की आवाज सुनाई पड़ रही है।" जब मैं कमरे से बाहर आकर सुखधाम भवन के गेट पर स्थित कैफेटेरिया में चाय पीने आया, तो अनेक साधक वहाँ चयास बुझाने आ चुके थे। कैफेटेरिया के सामने एक छोटा सा लॉन था और उसके पीछे छोटा सा राधा कृष्ण का मंदिर, जिसमें कई साधक दर्शनार्थ गये थे। कुछ देर पश्चात् सुखधाम भवन के सामने राधे–राधे का जाप करती हुई सैकड़ों महिलाओं की टोली दूरस्थ एक बड़े से मंदिर की ओर जाती हुई दिखाई पड़ी थी। समस्त वातावरण राधेमय हो रहा था।

अल्पाहार के उपरांत हम 9 बजे कारों द्वारा नंदग्राम को प्रस्थान कर गये थे और 10 बजे वहाँ पहुँच गये थे।

नंद मंदिर

नंदग्राम एक ऊँचे टीले पर स्थित है और नंद जी का मंदिर उसके शिखर पर। मंदिर पहुँचने के लिये दो–तीन सौ मीटर चढ़ना पड़ता है। ऊँचाई से ग्राम के छोटे छोटे रंगे पुते भवनों एवं गेहूँ, सरसों आदि के खेतों का दृश्य अत्यंत रमणीक था। मंदिर परिसर वृहत् एवं भव्य था, परंतु गर्भगृह, जिसमें नंद जी की बड़ी सी मूर्ति के अतिरिक्त राधा कृष्ण जी भी विद्यमान थे, को एक छोटे कमरे का रूप दे दिया गया था। पंडे श्रद्दालुओं के छोटे छोटे समूह बनाकर गर्भगृह में घुसने देते थे। एक समूह के घुसने के पश्चात प्रवेश द्वार बंद कर देते थे। जब मैं गर्भगृह मे घुसने को प्रतीक्षारत था, तब कोई न कोई पंडा साथ चलने हेतु हमें पटाने को मुझसे मेरे निवास जनपद, नाम, पिता का नाम आदि पूछने लगता था। मेरे द्वारा सूखा सा मुँह बनाकर इंकार कर देने पर 'राधे राधे' कहकर आगे बढ़ जाता था और मैं कुछ भौचक्का सा

उसे देखता रह जाता था। आगे चलकर मुझे ज्ञात हुआ कि मथुरा वृन्दावन का क्षेत्र इतना राधामय है कि राधे राधे का प्रयोग नमस्कार करने तक सीमित नहीं है, वरन् आशीर्वाद देने, कृतज्ञता जताने, वितृष्णा ज्ञापित करने, क्षोभ प्रकट करने जैसी परिस्थितियों में भी किया जाता है एवं प्रत्येक असामान्य परिस्थिति को सहज बना देने में यह राम बाण सिद्ध होता है। गोकुल में जब कृष्ण जी के जीवन पर बार बार कंस अथवा उसके सहयोगियों द्वारा आक्रमण होने लगे थे, तो नंद जी उन्हें यहीं ले आये थे। राधा जी का ग्राम बरसाने यहाँ से निकट होने के कारण इसी अवधि में कृष्ण जी का राधा से प्रेम हो गया था– आध्यात्मिक एवं प्लेटोनिक। राधा जी कृष्ण जी से आयु में बड़ी थीं, पहले से विवाहिता थीं और रिश्ते में कृष्ण की मामी थीं। राधा कृष्ण का यह प्रेम संसार भर के हिंदुओं को आज तक अनवरत प्रेमोत्सव में डुबोये रहता हैं इसने एक ऐसी उत्स–संस्कृति को जन्म दिया है, जो जीवन को पल–पल उत्सवमय बनाती है एवं चिरानंद को प्राप्त कराती है।

फिर हम बरसाने गये। पहले कृपालु जी के रंगीली महल पर रुके, जो यथा नाम तथा गुण था। वहाँ से पर्वत शिखर पर स्थित राधा मंदिर गये। पैदल चढ़ाई के मार्ग पर लगे बोगेनवेलिया के लाल फूल हमारे हृदयों को प्रफुल्लित कर रहे थे। यह मंदिर नंदग्राम के मंदिर की तुलना में अधिक वृहत्, भव्य एवं दर्शनीय था। यहाँ का माहौल किसी मंदिर के बजाय रंगस्थल का माहौल अधिक लगता था। गर्भगृह के सामने दर्शनार्थी राधा कृष्ण की मनमोहन मूर्तियों के दर्शन हेतु धक्का–मुक्की कर रहे थे परंतु उनके आगे बड़े से आगार में मंजीरे और ढोलक की थाप पर राधारानी के प्रेमगीत अनवरत गाये जा रहे थे एवं भक्त–भक्तिनों का नृत्य चल रहा था, जिसमें जिसका मन चाहे वह नृत्य–गायन में सम्मिलित हो जाता था। ऐसे उत्फुल्लकारी माहौल में हमारे समूह की महिलायें कैसे रुक सकतीं थीं और उनमें से अनेक मग्न होकर नाचीं।

कुसुम सरोवर :

बरसाने से चलकर हम गोवर्धन पहुँचे। यहाँ जब अनवरत वर्षा से जनजीवन असुरक्षित हो गया था, तब कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उंगली पर उठाकर उनकी वर्षा से रक्षा की थी। मुझे यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि यहाँ अब कोई पर्वत नहीं था, बस मंदिर था, जिसमें एक बड़ी मनोहारी राधा कृष्ण की मूर्ति विराजमान थी। मंदिर से लगभग पाँच किलोमीटर दूर कुसुम सरोवर था। एक विशालकाय ताल जो सुंदर परंतु वीरान था।

वहाँ से हम लोग मथुरा आ गये। वहाँ पुलिस उपाधीक्षक श्री मुकुल द्विवेदी ने अपने घर पर समोसा, खस्ता कचौड़ी, ढोकला और मलाईदार लस्सी के भोजन पर आमंत्रित कर रखा था। लस्सी इतनी स्वादिष्ट थी कि मेरे सहित अधिकांश साधक यह कहे बिना न रह सके कि उन्होने इतनी स्वादिष्ट लस्सी पहले कहीं नहीं पी थी।

सायं होने पर साधक द्वारिकाधीश मंदिर गये। श्री मुकुल द्विवेदी ने जलमार्ग से नाव पर सैर करते हुए वहाँ जाने का प्रबंध करवा दिया था। ढलते सूरज की बेला में मंद बयार बह रही थी। ऐसे में नाव की सैर बड़ी लुभावनी थी एवं वहाँ से आरती के दृश्य एवं घंटियों ने हमें एक अलौकिक संसार में पहुँचा दिया था। वहाँ से सब लोग कृष्ण जन्म स्थान पर आ गये। जन्म स्थान निःसंदेह भव्य एवं सुंदर था, परंतु मानव द्वारा ईश्वर को बाँट देने के उद्देश्य से उसके बगल में बनाई गई मस्जिद और दोनो की सुरक्षा हेतु लगे सैकड़ों पुलिसजन हृदय में टीस पैदा करते थे। जन्म जेल के दर्शन के उपरांत हमने उसी परिसर में नये बने मंदिरों के दर्शन किये और यंत्रचालित गुड़ियों द्वारा दिखाई जाने वाली लीलायें देखीं। फिर राधा–कृष्ण के खयालों में मग्न होकर हम सुखधाम भवन पर आकर सो गये।

अगला दिन हम सब ने वृंदावन के भ्रमण के लिये आरक्षित कर रखा था। सर्वप्रथम हम अतीव कामरूप बांकेबिहारी के दर्शन करने गये। मंदिर पतली गलियों के अंदर स्थापित है और भीड़ के कारण वहाँ पहुँचने में कठिनाई होती है, फिर भी बांकेबिहारी की एक झलक पाने हेतु दर्शनार्थी जान की बाजी लगाये रहते हैं। देश–परदेश से मंगाये गये गुलाब और गेंदे के फूलों की मालाओं से मंदिर गमकता रहता है। वृंदावन के बंदरों का परिचय दिये बिना वर्णन अधूरा रहेगा। हमें पहले से ही सचेत कर दिया गया था कि अपने–अपने पर्स, खाद्य पदार्थ और चश्मे को छिपाकर रखें। बंदरों द्वारा लुटेरों की भाँति इन्हें उड़ा लेने एवं विभिन्न प्रकार के नाटक कर मनचाहा खाद्य पदार्थ प्राप्त करने के उपरांत ही वापस करने के किस्से यहाँ गली गली में प्रचलित हैं।

हमारा अगला गंतव्य था निधिवन अर्थात वृंदावन, जो आज भी राधा और कृष्ण का रासलीला–स्थल माना जाता है। यहाँ जाने हेतु हम कार से यमुना तट तक गये। वहाँ से पतली लम्बी गलियों में पैदल चलकर रहस्योत्पादक एकांत में स्थित इस वन में पहुँचे। हमारे साथ एक स्वयं में खोई रहने वाली मनमौजी महिला थीं अनिता जी। वह प्रायः समूह से अलग

चलतीं थीं और देर से तैयार होने, चाभी खो जाने, गन्ने का रस पीने लगने जैसे कारणों से समूह को प्रतीक्षारत रखती थीं। यमुना तट से हम कुछ दूर आगे बढ़ चुके थे कि तभी पीछे से जोर–जोर से चीख–पुकार आने लगी थी। हम लोग पीछे देखते हुए रुक गये थे। बड़ी देर बाद अनीता जी आईं थीं। तब पता चला था कि बंदर उनका पर्स उड़ा ले गया था, जिसे बड़ी चिरौरी और खातिरदारी के बाद ही वापस किया था। वृंदा तुलसी का दूसरा नाम है और यह वन एक नवीन प्रकार की तुलसी के वृक्षों से भरा हुआ है। ये तुलसी के वृक्ष मनुष्य की ऊँचाई से 2–3 फीट अधिक ऊँचे होते हैं। इनमें प्रत्येक में अनेक घुमावदार तने होते हैं, जो सर्प सर्पिणी की भाँति एक दूसरे से लिपटे रहते हैं, जिसे राधा–कृष्ण के चिर–आलिंगन का द्योतक माना जाता है। ऊपर इनकी शाखायें लता–गुल्म की भाँति फैलकर दूसरे निकटस्थ वृक्ष का चुम्बन लेतीं रहतीं हैं। इनकी घनी पत्तियाँ प्रेम–क्रीड़ारत राधा–कृष्ण को एकांत उपलब्ध कराती हैं। इस वन के बीच में एक छोटा सा मंदिर है, जहाँ प्रति रात्रि राधा कृष्ण के लिये खीर एवं पान के दो बीड़े रख दिये जाते हैं, जिनके विषय में प्रचलित है कि अगली प्रातः दोनों खाये हुए पाये जाते हैं। इस उपवन के बाहर दो दिशाओं में कतिपय भवन बने हुए थे, जिनकी खिड़कियाँ लकड़ी का पटरा ठोंक कर बंद कर दी गईं थीं, क्योंकि लोगों का विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति राधा–कृष्ण की रासलीला धोखे से देख लेता है तो अंधा हो जाता है और यदि जानबूझ कर देखता है तो मर जाता है। रमणीक वन में राधारानी और कृष्ण कन्हैया की रासलीला का रहस्य हमारे मन में गहराई तक रम रहा था और हम भी राधा–कृष्ण लीन हो रहे थे। मंदिर से आगे चलकर कतिपय समाधि–स्थल दिखाई दिये, जो उन व्यक्तियों के बताये गये, जिन्होने निधि–वन में लुक–छिप कर रासलीला को देखने का प्रयत्न किया था और दूसरी प्रातः मृत पाये गये थे। यह सुनकर भी हम में से कतिपय लोग इतने राधाकृष्णमय हो रहे थे कि यदि अवसर होता तो रात्रि में छिपकर रासलीला देखने को तत्पर थे।

श्रीरंग जी का मंदिर दक्षिण भारत की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना है। इसके मुख्य द्वार पर टनों वजन वाला ऊँचा सा स्वर्ण स्तम्भ विद्यमान है। इसके अतिरिक्त अनेक मूर्तियाँ एवं रथ, जो अवसर विशेष पर ही निकाले जाते हैं, रजत एवं स्वर्ण के बने हुए हैं। हमारे गाइड ने यहाँ मुख्य द्वार के निकट एक मूर्ति दिखाकर एक अनोखी कहानी बताई। उसका कहना था कि इस मूर्ति में कृष्ण का वेश्या के यहाँ जाने के लिये उद्यत होने पर राधा द्वारा उन्हें रोकना दिखाया गया है। हम सब राधा कृष्ण के प्रेम में ऐसे खोये

हुए थे कि ऐसी अविश्वसनीय बात सुनकर भी हम में से किसी का उस गाइड से कोई प्रश्न करने का मन न हुआ।

श्रीरंग जी मंदिर में स्वर्णमूर्तियाँ

श्रीरंग जी के मंदिर से हमारा योगी समूह गोकुल एवं रमण की रेती गया। शिशु कान्हा के रेत मे लोट लगाने और यशोदा मैय्या के उन्हें देखकर खिलखिलाने की कल्पना किसका मन नहीं मोह लेगी? सोनी जी एवम् अक्षय ने जी भरकर लोट लगाई। दूसरे दिन मथुरा से लखनऊ आते समय सोनी जी ने रेलगाड़ी में हमे बताया कि पता नहीं उस रेत में क्या विशेषता थी कि लोट लगाने के बाद उन्होने न तो रेत साफ की और न नहाये, फिर भी उन्हें कोई किसकिसाहट की अनुभूति नहीं हुई।

रमण की रेती से लौटकर हम सब सीधे इस्कॉन मंदिर गये। मुकुल द्विवेदी जी ने इस्कॉन की आरती की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए हमें बताया था कि उस आरती के पश्चात् होने वाले नृत्य को देखते समय बहुत कम पुरुष एवं महिलायें अपने को नृत्य में सम्मिलित होने से रोक पाते हैं। अतः हम लोग आरती के दौरान ही वहाँ पहुँच गये थे। यद्यपि मंदिर में बड़ी भीड़ थी, तथापि आरती का दृश्य अत्यंत आह्लादकारी था। आरती समाप्त होते ही कतिपय उत्साही साधिकायें नृत्य देखने प्रभुपाद मंदिर चली गईं और नृत्य मंडली में उन्मुक्त होकर नाचीं।

इस्कॉन मंदिर से हम प्रेम मंदिर गये। आज का दिन पर्याप्त गर्म रहा था, परंतु हमारे प्रेम मंदिर पहुंचते ही आकाश में अकस्मात घने बादल छा गये, बिजली कड़कने लगी एवं पानी की बौछारें पड़ने लगीं। ऐसा लग रहा था कि नृत्यलीन राधा कृष्ण का प्रेम फुहार बन कर हमारे संतप्त बदन को रोमांचित कर रहा था। यह मंदिर स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण होने के अतिरिक्त प्रकाश की थोड़े थोड़े अंतराल में परिवर्तित होने वाली रंगसज्जा के कारण रात्रि में प्रेमलोक जैसा लग रहा था।

प्रेम मंदिर

प्रेम मंदिर से हम राधा कृष्ण के प्रेम रस में लीन होकर रात्रि विश्राम हेतु सुखधाम भवन चले आये। राधानगरी की यादें संजोये अगली प्रातः ट्रेन से लखनऊ के लिये वापस चल दिये।

विटामिन

- Dr. Induja Dixit (MSc, PhD)
Senior Dietician
Charak Hospital and Research Center, Lucknow
induja.awasthi@gmail.com

विटामिन क्या होते हैं?

विटामिन की सभी जीवों को अल्प मात्रा में आवश्यकता होती है। रासायनिक रूप से ये कार्बनिक यौगिक होते हैं। विटामिन जीवन रक्षक होते है। ये न केवल शरीर को रोगों से बचाते हैं बल्कि शरीर को सही रूप में काम करने लायक भी बना कर रखते हैं। विटामिन शरीर के अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने एवं सामान्य कार्यो के लिए बहुत ही सूक्ष्म मात्रा में आवश्यक होते है और यह मात्रा हमें उस भोजन से मिलती है जो हम खाते हैं क्योंकि विटामिन का निर्माण शरीर में अपने आप नहीं होता है। हम जानते हैं कि विभिन्न पोषक तत्व हमारे भोजन को संपूर्णता प्रदान करते हैं और विटामिन का इसमें खास महत्व है। आहार में किसी भी विटामिन की कमी, किसी भी बीमारी का न्यौता होती है। हमारे खाने में उपलब्ध सभी पौष्टिक तत्वों का लाभ भी शरीर को सही ढंग से मिल सके, यह काम विटामिन का ही है।

विटामिन 6 प्रकार के होते हैं :

1. विटामिन A
2. विटामिन B
3. विटामिन C
4. विटामिन D
5. विटामिन E
6. विटामिन K

विटामिनों को दो वर्गों में विभिजित किया गया है:

1 वसा में घुलनशील (Fat soluble) विटामिन– विटामिन A, D, E तथा K

2. जल में घुलनशील (Water soluble) विटामिन : विटामिन B तथा C

वसा में घुलने वाले विटामिन आमतौर पर हमारे शरीर के अतिरिक्त चर्बी वाले भागों में, जैसे कि लिवर में मौजूद होते हैं। वसा में घुलने वाले विटामिनों को पानी में घुलने वाले विटामिनों की तुलना में जमा करना आसान होता है जिससे कि वे शरीर की हर क्रिया में कई महीनों तक अपना सहयोग कर सकें। पानी में घुलने वाले विटामिन के उत्पाद शरीर में जमा नहीं रह पाते क्योंकि वे मूत्र द्वारा निकल जाते हैं। इसी वजह से शरीर को निरंतर पानी में घुलने वाले विटामिन उत्पादों को ग्रहण करने की आवश्यकता होती है।

विटामिन A :

विटामिन A देखने के लिये अत्यंत आवश्यक होता है। साथ ही यह बीमारी से बचने के काम आता है। यह विटामिन शरीर में अनेक अंगों को सामान्य रूप में बनाये रखने में मदद करता है जैसे कि त्वचा, बाल, नाखून, दाँत, मसूड़ा और हड्डी। यह भ्रूण की नार्मल ग्रोथ और डेवलेप्मेंट के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। सबसे महत्वपूर्ण बीमारी जो कि विटामिन ए के अभाव में होती है, वह है अंधेरे में कम दिखाई देना, जिसे रतौंधी कहते हैं। ऊर्जा पैदा करने के लिए सभी कोशिकाओं को इसकी जरूरत पडती है। शाकाहारी लोगों और शराब का सेवन करने वालों को इसकी अधिक जरूरत होती है। लिवर की बीमारियों, सिस्टिक फाइब्रोसिस आदि से पीड़ित लोगों को भी विटामिन ए की आवश्यकता होती है। विटामिन ए वसा में घुलनशील विटामिन है। यह मुख्यतया रेटिनॉयड और कैरोटिनॉयड दो रूपों में पाया जाता है। सब्जियों का रंग जितना गहरा और चमकीला होगा, उनमें कैरोटिनॉयड की मात्र उतनी ही अधिक होगी। विटामिन ए के स्रोत है –चुकंदर, ब्रोकली, साबुत अनाज, पनीर, बटर, गाजर, मिर्च, डेयरी प्रोडक्ट, हरी पत्तेदार सब्जियां, अंडा, बींस, राजमा, मीट, आम, सरसों, पपीता, धनिया, चीकू, मटर, कद्दू, लाल मिर्च, सी फूड, शलजम, टमाटर, शकरकंद, तरबूत, मकई के दाने, पीले या नारंगी रंग के फल, कॉड लिवर ऑयल आदि। अत्यधिक विटामिन ए लेने से शरीर पर अनेक दुष्प्रभाव हो सकते हैं जैसे कि सिरदर्द, देखने में दिक्कत, थकावट, दस्त, बाल गिरना, स्किन खराब हो

जाना, हड्डी और जोडों में दर्द आदि की समस्या हो सकती है।

विटामिन B:

विटामिन बी शरीर को जीवन शक्ति देने के लिए अति आवश्यक होता है। इस विटामिन की कमी से शरीर अनेक रोगों का गढ़ बन जता है। विटामिन बी के कई विभाग मिलकर विटामिन 'बी' काम्पलेक्स कहलाते है। हालाँकि सभी विभाग एक दूसरे के अभिन्न अंग है, लेकिन फिर भी सभी आपस मे भिन्नता रखते है। यह विटामिन पानी मे घुलनशील है। इसका प्रमुख कार्य स्नायु तंत्र को स्वस्थ रखना तथा भोजन के पाचन में सक्रिय योगदान देना होता है। भूख को बढ़ाकर यह शरीर को जीवन शक्ति देता है।

विटामिन बी का मुख्य काम हमारी पाचनक्रिया को स्वस्थ रखना है। इस विटामिन की कमी से पेट संबंधी परेशानियाँ जैसे भूख न लगना, दस्त आदि हो सकते हैं। नसों में सूजन और बेरी–बेरी रोग की संभावना भी हो जाती है। मांसपेशियाँ कमजोर हो जाती हैं और पैरालिसिस या हार्टफेल भी हो सकता है। हाथ पैरो की उंगलियों मे सनसनाहट होना, मस्तिष्क के स्नायु में सूजन व दोष होना, पैर ठंडे व नम होना, सिर के पिछले भाग मे स्नायु दोष हो जाना, मांस पेशियो का कमजोर होना, हाथ पैरों के जोड़ अकड़ना, शरीर का वजन घट जाना, नींद कम आना, मूत्राशय (मसाने) में दोष आना, माहवारी की खराबी होना, शरीर पर लाल चकती निकलना, दिल कमजोर होना, शरीर मे सूजन आना,सिर चकराना, नजर कम हो जाना, पाचन क्रिया की खराबी होना विटामिन बी के अभाव में होता है। अच्छी गुणवत्ता के लिए बायोटिन नामक विटामिन की जरुरत होती है। यह विटामिन बी का एक प्रकार है। बायोटिन बालों की बढ़त को नियंत्रित करता है तथा उन्हें झड़ने से रोकता है। कीमोथेरेपी में काफी मात्रा में बाल झड़ते हैं, अतः मरीजों को बाल बढ़ाने के लिए बायोटिन की सलाह दी जाती है।

विटामिन बी कॉम्प्लेक्स के स्रोतों में टमाटर, चोकर युक्त गेहूँ का आटा, अण्डे की जर्दी, हरी पत्तियों का साग, बादाम, अखरोट, बिना पालिश किया चावल, पौधो के बीज, सुपारी, नारंगी, अंगूर, दूध, ताजे सेम, ताजे मटर, दाल, जिगर, आलू, मेवा, खमीर, मक्की, चना, नारियल, पिस्ता, ताजे फल, दही, पालक, बन्दगोभी, मछली, अण्डे की सफेदी, माल्टा, चावल की भूसी,

आदि आते हैं।

विटामिन C:

विटामिन सी को एस्कोर्बिक ऐसिड के नाम से भी जान जाता है। यह शरीर की कोशिकाओं को बाँध के रखता है। इससे शरीर के विभिन्न अंग को आकार बनाने में मदद मिलता है। यह शरीर के खून के नसों (रक्त वाहिकाओं) को मजबूत बनाता है। यह सामान्य सर्दी–जुकाम में दवा का काम कर सकता है। इसके अभाव में मसूडों से खून बहता है, दाँत दर्द हो सकता है, दाँत ढीले हो सकते हैं या निकल सकते हैं। स्किन या चर्म में भी चोट लगने पर अधिक खून बह सकता है। इस विटामिन के अभाव से स्कर्वी हो सकता है। इसके अलावा इससे शरीर के विभिन्न अंगों में, जैसे कि गुर्दे और अन्य जगह में पथरी हो सकती है। गुर्दे की पथरी ऑक्जेलेट क्रिस्टल की बनी होती है। इस पथरी के कारण मूत्र विसर्जन में जलन या दर्द हो सकता है, विटामिन सी के अभाव में शरीर में दूषित कीटाणुओं की वृद्धि हो सकती है। इसके कारण मोतिया बिन्द, खाया हुआ खाना शरीर में पोषण नहीं कर पाना व घाव में मवाद बढ़ना, हड्डियाँ कमजोर होना, चिड़चिड़ा स्वभाव, मुँह से बदबू आना, पाचन क्रिया में दोष उत्पन्न होना, श्वेत प्रदर, संधि शोथ व दर्द, पुट्ठों की कमजोरी, भूख न लगना, साँस कठिनाई से आना, चर्म रोग, गर्भपात, रक्ताल्पता आदि हो सकते हैं। इनके अलावा अल्सर, चेहरे पर दाग पड जाना, फेफड़े कमजोर पड़ जाना, जुकाम होना, आँख, कान व नाक के रोग, एलर्जी होना इत्यादि होने की संभावना रहती है।

मनुष्यों को विटामिन सी खाद्य पदार्थों के साथ ग्रहण करना होता है, क्योंकि शरीर इसका स्वयं निर्माण नहीं करता। ये फलों और सब्जियों से प्राप्त होता है, जैसे लाल मिर्च, संतरा, अनानास, टमाटर, स्ट्रॉबेरी और आलू आदि। संतरा विटामिन सी का अच्छा स्रोत है। यह घुलनशील तत्व होता है। कच्चे फल और सब्जियाँ इसके सबसे बड़े स्रोत हैं। सेब के रस से भी यह प्राप्त होता है, लेकिन इसे अलग तत्वों की मदद से भी ग्रहण किया जाता है। सूखी अवस्था में दालों में विटामिन सी नहीं होता लेकिन भीगने के बाद ये अच्छी मात्रा में प्रकट हो जाता है।

विटामिन D:

विटामिन डी वास्तव में एक विटामिन की तुलना में एक हार्मोन है। विटामिन डी (कैल्सीट्रियोल) बायोएक्टिव विटामिन डी या कैल्सीट्रियोल एक स्टेरॉयड हार्मोन है जो कैल्शियम और फास्फोरस के शरीर के स्तर को विनियमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए लंबे समय से जाना जाता है । विटामिन डी वसा–घुलनशील होता है। इसके दो प्रमुख रूप हैं– विटामिन डी२ (या अर्गोकेल्सीफेरोल) एवं विटामिन डी३ (या कोलेकेल्सीफेरोल) । सूर्य के प्रकाश, खाद्य एवं अन्य पूरकों से विटामिन डी प्राप्त होता है। त्वचा जब धूप के संपर्क में आती है तो शरीर में विटामिन डी निर्माण की प्रक्रिया आरंभ होती है। यह मछलियों में भी पाया जाता है। विटामिन डी की मदद से कैल्शियम को शरीर में बनाए रखने में मदद मिलती है जो हड्डियों की मजबूती के लिए अत्यावश्यक होता है। इसके अभाव में हड्डियाँ कमजोर होती हैं व टूट भी सकती हैं। छोटे बच्चों में यह स्थिति रिकेट्स कहलाती है और वयस्कों में हड्डी के मुलायम होने को ओस्टीयोमलेशिया कहते हैं। इसके अलावा, हड्डी के पतला और कमजोर होने को ओस्टीयोपोरोसिस कहते हैं। इसके अभाव में हड्डी कमजोर होता है और टूट भी सकता है (फ्रेक्चर)। इसके अलावा विटामिन डी कैंसर, क्षय रोग जैसे रोगों से भी बचाव करता है। भारतीयों में विटामिन डी की समस्या गंभीर होती जा रही है। शोधकर्ताओं ने घर में ज्यादा देर तक रहने की बढ़ती संस्कृति को इसका कारण बताया है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि 65–70 प्रतिशत भारतीय महिलाओं में विटामिन डी की कमी है और 15 प्रतिशत महिलाओं में ही मात्रा पर्याप्त हैं। महिलाओं में विटामिन डी की कमी से तनाव की समस्या पैदा हो जाती है और इसके कारण वे लगातार उदासी महसूस करती हैं। युवा महिलाओं में विटामिन डी की कमी के कारण हड्डियों व दाँत की कमजोरी, क्षय और गुर्दे की पथरी हो सकती है, जबकि रजोनिवृत्त महिलाओं में अक्सर हड्डियों की बीमारी जैसे ऑस्टियोपोरोसिस होती है। भारत में ज्यादातर महिलाएं इसलिए ऑस्टियोपेनिआ या ओस्टियोपोरोसिस से ग्रस्त हैं क्योंकि वे धूप में नहीं आतीं हैं और घर के अंदर रहती हैं। शहरी महिलाएं जो सनस्क्रीन का प्रयोग करती हैं, वे भी इसकी कमी के जोखिम पर हैं। वे खाद्य पदार्थों का उपभोग नहीं करते जो कि विटामिन डी जैसे समृद्ध होते हैं– अंडे का पीला भाग, मछली के तेल, विटामिन डी युक्त दूध और बटर में, धूप सेकने से, सूरजमुखी के बीज, अंडे की जर्दी, मशरूम, सामन आदि से यह प्राप्त होता है। आहार की

कमी वाली महिलाओं में दोबारा, अनियोजित, और जल्दी जल्दी गर्भधारण माता और गर्भ में विटामिन डी की कमी को बढ़ाना पाया गया है। इसके बदले में गर्भावस्था के दौरान पूर्व–ईक्लम्पसिया या उच्च रक्तचाप हो सकता है।यदि आप गर्भावस्था के दौरान विटामिन डी की कमी से पीड़ित हैं, तो संभावना है कि आप का भी विटामिन डी की कमी से पीड़ित होगा।

हाल ही में शोध के अनुसार विटामिन डी की कमी से पुरुषों में प्रोस्टेट कैंसर की गंभीरता का अनुमान लगाया जा सकता है। जरूरी नहीं है कि विटामिन डी प्रॉस्टेट कैंसर को जड़ से ही मिटा देता है, मगर बचाव जरूर करता है। यह लो–ग्रेड प्रॉस्टेट कैंसर को बढ़ने से रोकता है।

गहरे रंग की त्वचा के लोगों को धूप की अधिक जरूरत है सफेद त्वचा वाले लोगों की तुलना में। दोनों में विटामिन डी का उत्पादन करने की क्षमता एक नहीं होती।

अत्याधिक विटामिन डी लेने से शरीर पर अनेक दुष्प्रभाव हो सकते हैं जैसे कि इससे शरीर के विभिन्न अंगों में, जैसे कि गुर्दे में, दिल में, खून के नसों में और अन्य जगह में, एक प्रकार का पथरी हो सकता है। इससे रक्तचाप बढ सकता है, खून में कोलेस्टेरोल अधिक हो सकता है और दिल पर असर पर सकता है। साथ ही चक्कर आना, कमजोरी लगना और सिरदर्द हो सकता है। पेट खराब होने से दस्त भी हो सकता है।

45 मिनट तक धूप में रहने से विटामिन डी की कमी से होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है। धूप सेंकने के लिए सुबह 10 बजे से लेकर दोपहर दो बजे तक का वक्त सबसे अच्छा होता है। सिर, चेहरे और शरीर का ऊपरी हिस्सा सीधे धूप में आना चाहिये। याद रखें कि अगर पाँच मिनट के लिए हटे तो पूरी प्रक्रिया दोहरानी पड़ेगी।

विटामिन E:

विटामिन ई, खून में लाल रक्त कोशिका को बनाने के काम आता है। यह विटामिन शरीर में अनेक अंगों को सामान्य रूप में बनाये रखने में मदद करता है जैसे कि मांस–पेशियां, अन्य टिशू। यह शरीर को ऑक्सिजन रेडिकल्स से बचाता है। इस गुण को एंटीऑक्सिडेंट कहा जाता है। विटामिन

ई सेल के अस्तित्व बनाय रखने के लिये, उनके बाहरी कवच या सेल मेम्ब्रेन को बनाये रखता है। विटामिन ई शरीर के फैटी एसिड को भी संतुलन में रखता है।

समय से पहले हुये या प्रीमेच्योर नवजात शिशु में विटामिन ई की कमी से खून में कमी हो जाता है। इससे उनमें एनीमिया हो सकता है। बच्चों और वयस्क लोगों में, विटामिन ई के अभाव से, दिमाग के नसों का या न्यूरोलोजिकल समस्या हो सकती है।

विटामिन ई की मदद से वजन में भी काफी कमी ला सकते हैं। यह एक जाना माना तथ्य है कि हमारे शरीर में 103 पोषक तत्व, खनिज और विटामिन होते हैं। खूबसूरत त्वचा और लम्बे एवं घने बाल प्राप्त करने के लिए पर्याप्त मात्रा में विटामिन और खनिज लेने जरूरी हैं।कभी भी खानपान की सूची बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि किसी भी चीज की कमी हानिकारक हो सकती है। परन्तु किसी भी विटामिन या खनिज पदार्थों का जरुरत से ज्यादा सेवन करने से भी शरीर को हानि ही होती है।

विटामिन K:

शरीर में ब्लड को गाढ़ा करके जमाने का काम विटामिन के ही करता है। इस विटामिन की कमी से ब्लड की क्लॉटिंग नहीं हो पाती है और खून का बहाव रोकना मुश्किल हो जाता है। यह लिवर को स्वस्थ रखता है। छिलकेदार अनाज और हरी सब्जियों के सेवन से यह विटामिन लिया जा सकता है। अधिक मात्र में विटामिन ए का सेवन 'विटामिन के' के अवशोषण को प्रभावित करता है। वसा में घुलनशीन विटामिन के रक्त का थक्का बनाने के लिए जरूरी है।अगर नियमित रूप से हरी सब्जियाँ, अंकुरित अनाज, दूध और फलों का सेवन किया जाए तो हमारे शरीर में हमेशा विटामिन की पूर्ति बनी रहेगी।

ॐ श्री गुरु देवाय नमः

With best Compliments from:.....

SHREE GURU KRIPA ASSOCIATES

Arch.& Construction Designer

Designing & Construction
Labour Rate with Material

Contact for :
9415580950
7754929415

Add.: Near Krishna Vihar Colony Gate,
Raibareli Road, Lucknow.

इण्डोनेशिया में हिन्दू वैदिक संस्कृति

(श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी के ब्लॉग से उद्धृत)

कुछ वर्ष पूर्व मेरे एक मित्र ने दुनिया के सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या वाले देश इण्डोनेशिया से लौटने के बाद कच्छ के आदीपुर (गुजरात) में मुझे एक 20 हजार रुपया (वहाँ की करेंसी) का नोट दिखाया जिस पर भगवान गणेश मुद्रित थे। मैं आश्चर्यचकित हुआ और प्रभावित भी ।

जब पिछले महीने इण्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता से सिंधी समुदाय के कुछ महानुभावों के समूह ने 9,10 तथा 11 जुलाई 2010 को जकार्ता में होने वाले विश्व सिंधी सम्मेलन में आने का न्यौता दिया तो मैंने इसे तुरन्त स्वीकारा । इसका कारण यह था कि मैं इस देश पर भारतीय सभ्यता और विशेष रूप से रामायण और महाभारत जैसे महाग्रंथों के प्रभाव के बारे में अक्सर सुनता रहता था। करेंसी नोट पर गणेशजी का छपा चित्र इसका एक उदाहरण है।

मेरी पत्नी कमला, सुपुत्री प्रतिभा, दशकों से मेरे सहयोगी दीपक चोपड़ा और उनकी पत्नी वीना के साथ मैं 8 जुलाई को यहाँ से रवाना हुआ तथा 13 जुलाई को इस यात्रा की अविस्मरणीय स्मृतियाँ लेकर लौटा। इण्डोनेशिया में 13,677 द्वीप हैं जिनमें से 6000 से ज्यादा पर आबादी है। वहाँ की कुल जनसंख्या 20.28 करोड़ में से 88 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम और 10 प्रतिशत ईसाई हैं। यहां की 2 प्रतिशत हिन्दू आबादी मुख्य रूप से बाली द्वीप में रहती है।

बाली द्वीप के लिए हाल ही में स्वीकृत किया गया नया ब्राण्ड 'लोगो' (प्रतीक चिन्ह) देश की हिन्दू परम्परा का प्रकटीकरण है। इण्डोनेशिया के पर्यटन मंत्रालय का प्रकाशन इस प्रतीक चिन्ह को इस प्रकार बताता है– त्रिकोण (प्रतीक चिन्ह की आकृति) स्थायित्व और संतुलन का प्रतीक है। यह तीन सीधी रेखाओं से बना है जिनमें दोनों सिरे मिलते हैं, जो सास्वत, अग्नि (ब्रह्मा सृष्टि निर्माता), लिंग या लिंग प्रतिमान के प्रतीक हैं। त्रिकोण ब्रहमाण्ड के तीनों भगवानों – (त्रिमूर्ति– ब्रह्मा, विष्णु और शिव), प्रकृति के तीन चरणों (भूः, भुवः और स्वः लोक) और जीवन के तीन चरणों (उत्पत्ति, जीवन और मृत्यु) को भी अभिव्यक्त करते हैं। प्रतीक चिन्ह के नीचे लिखा बोधवाक्य शान्ति, शान्ति, शान्ति भुवना अलित दन अगुंग (स्वयं और विश्व पर शान्ति) जोकि एक पावन और पवित्र सिहरन देती है, जिससे गहन दिव्य ज्योति जागृत होती है जो सभी जीवित प्राणियों में संतुलन और शान्ति कायम करती है।

यहाँ 20000 रुपये के करेंसी नोट का नमूना दिया गया है। जैसा मैंने ऊपर वर्णन किया कि कुछ वर्ष पूर्व मैंने इसे देखा था और तभी तय किया था कि यदि मुझे इस देश की यात्रा करने का अवसर मिला तो मै स्वयं जा कर इसे प्राप्त करूँगा तथा औरों को दिखाऊँगा।

गणेश के चित्र के साथ इण्डोनेशियाई मुद्रा

जकार्ता जाने वाले यात्रियों के लिए इण्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता के उत्तर पश्चिम तट पर स्थित शहर के बीचोंबीच भव्य निर्मित अनेक घोड़ों से खिंचने वाले रथ पर श्री कृष्ण अर्जुन की प्रतिमा सर्वाधिक आकर्षित करने वाली है।

जकार्ता मुख्य चौराहे पर कृष्ण और अर्जुन की मूर्ति

इण्डोनेशिया में स्थानों, व्यक्तियों के नाम और संस्थानों का नामकरण संस्कृत प्रभाव की स्पष्ट छाप छोड़ता है।

भीम प्रतिमा

निश्चित रूप से यह जानकर कि इण्डोनेशिया में सैन्य गुप्तचर का अधिकारिक शुभांकर (mascot) हनुमान हैं, काफी प्रसन्नता हुई। इसके पीछे के औचित्य को वहां के एक स्थानीय व्यक्ति ने यूँ बताया कि हनुमान् ने ही रावण द्वारा अपहृत सीता को, जिन्हें अशोक वाटिका में बंदी बनाकर रखा गया था, का पता लगाने में सफलता पाई थी।

हमारे परिवार ने चार दिन इण्डोनेशिया – दो दिन जकार्ता और दो दिन बाली में बिताए।

बाली इस देश के सर्वाधिक बड़े द्वीपों में से एक है। यहाँ के उद्योगों में सोने और चाँदी के काम, लकड़ी का काम, बुनाई, नारियल, नमक और कॉफी शामिल हैं। लेकिन जैसे ही आप इस क्षेत्र में पहुँचते हैं तो आप साफ तौर पर पाएंगे कि यह पर्यटकों से भरा हुआ है। लगभग तीन मिलियन आबादी वाले बाली में प्रतिवर्ष एक मिलियन पर्यटक आते हैं।

इस द्वीप की राजधानी देनपासर है। हमारे ठहरने का स्थान मनोरम दृश्य वाला फोर सीजंस रिसॉर्ट था जो समुद्र के किनारे पर है और हवाई अड्डे से ज्यादा दूर नहीं है। रिसॉर्ट जाते समय रास्ते में मैंने जकार्ता में कृष्ण अर्जुन जैसी विशाल पत्थर पर बनी आकृति देखी हालाँकि यह जकार्ता में देखी गई आकृति से अलग किस्म की थी।

मैंने अपनी कार के ड्राइवर से पूछा, ''यह किसकी प्रतिमा है?'' और क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि जब उसने जवाब दिया तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। उसने बताया, "यह महाभारत के घटोत्कच की प्रतिमा है।" उसने आगे बताया "और शहर में इस आकृति में घटोत्कच के पिता भीम को भी दिखाया गया है जो दानव से भीषण युद्ध कर रहे हैं!"

भारत में, इन दोनों महाकाव्यों रामायण और महाभारत में से सामान्य नागरिक रामायण के अधिकांश चरित्रों को पहचानते हैं। लेकिन महाभारत के चरित्र कम जाने जाते है। वस्तुतः, भारत में भी बहुत कम होंगे जिन्हें पता होगा कि घटोत्कच कौन है? और वहाँ हमारी कार का ड्राइवर भीम से उसके रिश्ते के बारे में भी पूरी तरह से जानता था।

जकार्ता में सिंधी सम्मेलन और बाली में हमें रामायण के दृश्यों के मंचन की झलक देखने को मिली जो भारत में प्रचलित परम्परागत रूप से थोड़ा भिन्न थी। कलाकारों का प्रदर्शन तथा प्रस्तुति और जिन स्थानों पर यह

प्रदर्शन देखने को मिले वहाँ का सामान्य वातावरण भी पर्याप्त श्रद्धा और भक्ति से परिपूर्ण था।

मैं यह अवश्य कहूँगा कि इण्डोनेशिया के लोग हमसे ज्यादा अच्छे ढंग से रामायण और महाभारत को जानते हैं और संजोए हुए है।

इसके अतिरिक्त शिव जी तथा गणेश जी का एक १००० वर्ष पुराना मंदिर भी खुदाई में प्राप्त हुआ है। शोधकर्ताओं का कहना है की १०वीं सदी में हुए भयंकर ज्वालामुखी विस्फोट के कारण ये मंदिर लावे की तह में दब गया था तथा उनका कहना है की अब तक पूरी दुनिया में प्राप्त हुई विरासतों में यह सबसे उत्तम अवस्था में है।

इण्डोनेशिया की विमान सेवा का नाम भी विष्णु जी के वाहन गरुड़ के नाम पर रक्खा गया है

Garuda, the vehicle (Vimana) of Lord Vishnu, holds an important role for Indonesia, as it serves as the national symbol of Indonesia.

लाल कृष्ण आडवाणी

नयी दिल्ली

१७ जुलाई, २०१०

कार्यकारिणी अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा

अध्यक्ष

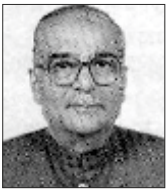

न्यायमूर्ति डी0के0 त्रिवेदी

महासचिव

उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष

ए0 के0 त्रिपाठी
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

जे0 के0 त्रिपाठी
संस्कृत मातृ भाषी

उपाध्यक्ष

पी0 एन0 मिश्रा
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

डा0 आर0 के मिश्रा
आर्थो सर्जन

उप मंत्री

के0 एस0 दीक्षित
आडीटर

सदस्य

जी0 एस0 मिश्र
स्थायी अधिवक्ता

सचिव महिला प्रकोष्ठ

कु0 प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

सदस्य

हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

डा0 डी0 एस0 शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सह–सम्पादक

एस0 एन0 दीक्षित
इंजी0 लेसा

सह–सम्पादक

डा0 अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

वर्ष 2017–2018 मंच पर वितरित पारितोषिक

1. स्व. पं. आर.के. मिश्र 'मान भाई' पारितोषिक प्रदत्त ब्रिगेडियर शीतांशु मिश्र (अ.प्रा.), प्रगति त्रिपाठी द्वारा श्री गोविन्द प्रसाद मिश्र, कक्षा 6, लालबाग गर्ल्स इण्टर कालेज, लखनऊ — रु. 3100/–
2. स्व. कु. सोनल मिश्र पारितोषिक प्रदत्त आर्थो सर्जन आर. के. मिश्र, शुभी मिश्रा पुत्री श्री प्रमोद शंकर मिश्र, कक्षा 7, श्री काशीश्वर इण्टर कालेज, मोहनलालगंज, लखनऊ — रु. 3000/–
3. ब्रिगेडियर छंगा लाल पाण्डे (अ.प्रा.) विशेष पारितोषिक, रोली शुक्ला पुत्री श्री रविशंकर शुक्ल, कक्षा बी.ए. द्वितीय वर्ष, कृष्णा देवी गर्ल्स डिग्री कालेज, रामनगर, आलमबाग, लखनऊ — रु. 2100/–
4. स्व. श्रीमती आशा द्विवेदी पारितोषिक ॥ प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, आकांक्षा तिवारी पुत्री श्री पुनीत तिवारी, कक्षा 12, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इण्टर कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ — रु. 1100/–
5. स्व. डा. विष्णु कुमार मिश्र पारितोषिक प्रदत्त आर्थोसर्जन आर.के. मिश्र, आयुषी तिवारी पुत्री श्री प्रेम शंकर तिवारी, कक्षा 9, यशोदा देवी बाल शिक्षा निकेतन, अशर्फाबाद, लखनऊ — रु. 2000/–
6. स्व. श्रीमती रामा देवी मिश्रा पारितोषिक प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र, श्वेता मिश्रा पुत्री श्री दीपक कुमार मिश्र, कक्षा 12, लाला गणेश प्रसाद वर्मा बालिका इण्टर कालेज, गोसाईगंज, लखनऊ — रु. 1100/–
7. स्व. श्रीमती विदेश्वरी देवी पारितोषिक प्रदत्त डा. सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी, साक्षी तिवारी पुत्री श्री पुनीत तिवारी, कक्षा बी.ए. प्रथम वर्ष, शशीभूषण बा.वि. डिग्री कालेज, लखनऊ — रु. 1000/–
8. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक । प्रदत्त डा. एल.पी. मिश्र सी. एडवोकेट, रोशनी शुक्ला पुत्री श्री गोविन्द प्रसाद शुक्ल कक्षा–6, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इं. कालेज — रु. 1000/–
9. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक ॥ प्रदत्त डा. एल.पी. मिश्र सीनियर एडवोकेट, मनाली बाजपेई पुत्री श्री संतोष कु0 बाजपेई, कक्षा–8, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इं. कालेज — रु. 1000/–

10. स्व. श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक ।।। प्रदत्त डा. एल.पी. मिश्र सी. एडवोकेट, नेहा अवस्थी पुत्री श्री विनोद कु0 अवस्थी, कक्षा–12, कस्तूरबा बा.वि.इं. कालेज — रु. 1000/–

11. स्व. श्रीमती दुर्गावती त्रिवेदी पारितोषिक प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, काजल तिवारी पुत्री श्री संतोष कुमार तिवारी, कक्षा 11, विष्णुनगर शिक्षा निकेतन कं.इ. कालेज, खुर्शेदबाग, लखनऊ — रु. 1000/–

12. स्व. श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक । प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, साक्षी मिश्रा पुत्री श्री अशोक मिश्र, कक्षा 11, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इण्टर कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ — रु. 1000/–

13. स्व. श्री जयशंकर मिश्र पारितोषिक प्रदत्त, कु. प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, एडवोकेट हाईकोर्ट, समीक्षा शुक्ला पुत्री श्री वीरेन्द्र कुमार शुक्ल, कक्षा 6, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इण्टर कालेज — रु. 600/–

14. स्व. श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक । प्रदत्त स्व. न्यायमूर्ति पं. जयशंकर त्रिवेदी, साक्षी द्विवेदी, पुत्री श्री आज्ञा राम द्विवेदी, कक्षा 9, बी.एस.एन.वी. गर्ल्स इण्टर कालेज — रु. 1000/–

15. स्व. श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक ।। प्रदत्त श्री ज्ञान बाजपेयी, आर्या शुक्ला पुत्री श्री सोमदत्त शुक्ल, कक्षा 11, कस्तूरबा बालिका विद्यालय इण्टर कालेज, शिवाजी मार्ग, लखनऊ — रु. 750/–

साइकिल पाने वाली छात्रायें

1– प्रगति पु. वेदरतन मिश्रा, इटौंजा, लखनऊ
2– मानसी पुत्री संतोष मिश्रा, ग्राम रतनापुर, लखनऊ
3– मानसी, पुत्री महेंद्र शुक्ला, हीरा देवी इंटर कालेज, इटौंजा, लखनऊ
4– सपना, पुत्री अनिल कुमार शुक्ला, दया शंकर पटेल इंटर कालेज, महरेली, सीतापुर
5– गौरवि पुत्री दिलीप मिश्रा, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर
6– शिवानी शुक्ला दयानन्द कालेज लखनऊ
7– मुस्कान पांडे, दयानन्द कालेज लखनऊ
8– आरती मिश्रा, दयानन्द इंटर कालेज, लखनऊ

नगद पुरस्कार पाने वाली छात्रायें

1– लक्ष्मी शुक्ला, दयानन्द कालेज लखनऊ — रु. 3000=00
2– शर्मिष्ठा बाजपेयी, रायबरेली — रु. 3000=00

साइकिल व नगद छात्रवृत्ति पाने वाली छात्राओं के नाम

सहयोग के लिए जिनके हम आभारी हैं

1–	श्री गंगा नारायण तिवारी	रु. 6000=00
2–	मीनू द्विवेदी	रु. 5000=00
3–	श्री रामजी मिश्रा	रु. 5000=00
4–	इं० देवेश शुक्ल	रु. 3500=00
5–	डा० परेश शुक्ला	रु. 3500=00
6–	डा० डी एस शुक्ल अपनी मौसी स्व० उर्मिला मिश्रा की स्मृति मे	रु. 2000–00
7–	श्री अखिलेश पाठक, मलिहाबाद, लखनऊ	रु. 2000=00
8–	श्रीमती शैल मिश्रा अपने पति स्व० जी० पी० मिश्रा की स्मृति मे	रु. 3000=00
9–	श्री डी० एन० दुबे अपने चाचा स्व. ब्रह्मानन्द दुबे की स्मृति में	रु. 3000=00
10–	श्री प्रवीण शुक्ल अपनी माँ की स्मृति में	रु. 3000=00
11–	श्री विजय शंकर मिश्रा स्मृति माता–पिता स्व. दयाशंकर एवं स्व. राधिका मिश्रा	रु. 1000=00
12–	सर्वश्री विनोद, ब्रह्म शंकर, प्रमोद दीक्षित	रु. 1500=00
13–	श्रीमति मालती मिश्रा स्मृति माता–पिता स्व. बल्देव प्रसाद एवं कोकिला बाजपेयी	रु. 1000=00

कान्यकुब्ज वाणी आभा मण्डल

संरक्षक **अनुदान–रु0 10000.00 मात्र**

1. न्यायमूर्ति श्री डी0के0 त्रिवेदी (अव.प्रा.) लखनऊ। 9415152086
2. श्रीमती नीरा शर्मा पत्नी डा0 राजीव शर्मा, आई.ए.एस. 9810722663
3. डा0 राजीव शर्मा, आई.ए.एस.

वाणी पुत्र **अनुदान रु0 5000.00**

1. डॉ0 यू0डी0 शुक्ल (स्व0), लखनऊ
2. डॉ0 वी0के0 मिश्र, लखनऊ। 9415020426
3. इं0 एम0एन0 मिश्रा, लखनऊ। 9453945400
4. श्री ललित कुमार बाजपेयी, रायबरेली। 9415034368
5. श्री उदयन शर्मा
6. श्री प्रमोद शंकर शुक्ल, रायबरेली। 9450558657
7. श्रीमती रोली तिवारी। 9839882742

अति विशिष्ट सदस्य **अनुदान रु0 3000.00**

1. श्री रामजी मिश्र, सीतापुर। 9450379054
2. इं0 देवेश शुक्ल, लखनऊ। 9450591538
3. आर्किटेक्ट अनुराग शुक्ल, लखनऊ। 9415580950

विशिष्ट सदस्य **अनुदान रु0 2000.00**

1. श्री सूर्य प्रकाश बाजपेयी। 9335159363
2. श्री उपेंद्र मिश्र, लखनऊ। 9415788855
3. डा0 आर0एस0 बाजपेयी
4. डा0 आर0के0 मिश्र। 9415012333
5. पं0 विनोद बिहारी दीक्षित (स्व0)
6. पं0 विजय शंकर शुक्ल (स्व0) लखनऊ
7. डी0के0 बाजपेयी, लखनऊ। 9621479044
8. प्रो0 पी0पी0 त्रिपाठी, बलरामपुर। 9450551394

9.	डा0 प्रांजल त्रिपाठी, बलरामपुर।	9919879799
10.	डा0 निधि त्रिपाठी, बलरामपुर	
11.	डा0 बी0एन0 तिवारी, आई0ए0एस0, लखनऊ	
12.	श्रीमती सुमन शुक्ला, लखनऊ	
13.	मीरा शिवेन्दु शुक्ल, कानपुर ।	9721756269
14.	इं. लक्ष्मी कान्त शुक्ल, लखनऊ।	9839646116

आजीवन सदस्य **अनुदान रु0 1000.00**

1.	श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी,लखनऊ।	9307222027
2.	पं0 भारतेन्दु त्रिवेदी,सीतापुर।	9451194337
3.	श्री राधा रमण त्रिवेदी, सीतापुर	
4.	श्री के0के0 त्रिवेदी, लखनऊ।	9415020510
5.	श्री आर0सी0 त्रिपाठी,लखनऊ।	9415012040
6.	श्री नवीन कुमार शुक्ल, लखनऊ।	950666731
7.	श्रीमती मीनू द्विवेदी,कानपुर।	9336166380
8.	इं0 बसंत राम दीक्षित, लखनऊ।	9335075482
9.	श्री सुधीर कुमार पांडे, लखनऊ।	9415521031
10.	श्रीमती अर्चना तिवारी, लखनऊ।	
11.	एडवो0 कु0 प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, लखनऊ।	9415026087
12.	श्री अनिल कुमार त्रिपाठी,सीतापुर।	9415524848
13.	ब्रिगेडियर सीतांशु मिश्र, लखनऊ।	9454592411
14.	श्री कृपा शंकर दीक्षित, लखनऊ।	9455713711
15.	डा0 अनुराग तिवारी, कानपुर।	9415735630
16.	श्री आर0के0 शुक्ल, लखनऊ।	9919623121
17.	डा0 आर0सी0 मिश्र, लखनऊ।	0522 6521353
18.	श्री विनोद कुमार मिश्र, उन्नाव।	9919740633
19.	श्री राजकिशोर अवस्थी, लखनऊ।	9956084970
20.	डा0 पी0एन0 अवस्थी, लखनऊ।	9415308555
21.	श्री कौशल किशोर शुक्ल, लखनऊ।	9335968454

22. श्री विनय कुमार शुक्ल,रमा बाई नगर। 9450350878
23. श्री मनी कान्त अवस्थी, लखनऊ । 7607479838
24. श्रीमती अनुराधा शुक्ला, रायबरेली
25. इं. के0बी0 शुक्ल, लखनऊ। 9415004466
26. श्रीमती हेमा दिनेश मिश्रा, लखनऊ। 9721975102
27. श्री ब्रह्म शंकर दीक्षित, लखनऊ। 9415049660
28. श्री शंभु प्रसाद पांडे, लखनऊ। 9450717711
29. ई0 एस0एस0 शुक्ल, लखनऊ। 9450761403
30. श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी
31. श्री ज्ञान सिंधु पांडे, लखनऊ। 8765531281
32. श्री डी0एन0 दुबे, आई0ए0एस0, लखनऊ। 9415408018
33. श्री श्रीकांत दीक्षित, लखनऊ। 9415766901
34. उमेश चंद्र मिश्र, लखनऊ। 9305245599
35. डा0 ओंकार नाथ मिश्रा, लखनऊ। 9415022957
36. श्री अश्वनी कुमार शुक्ल, फतेहपुर
37. श्री राघवेंद्र मिश्र, लखनऊ । 9918001628
38. प्रफुल्ल कुमार पाठक, रायबरेली । 7388192190
39. श्री आत्म प्रकाश मिश्र, लखनऊ । 9415018200
40. श्री समीर बाजपेयी, इलाहाबाद । 9415306363
41. श्री राकेश कुमार मिश्र, लखनऊ। 9335209896
42. डा0 एस0के0 त्रिपाठी, लखनऊ। 9335917261
43. श्री राजेश नाथ मिश्र, लखनऊ। 9454292354
44. मालती विजय शंकर मिश्रा, लखनऊ। 9336704017
45. राम कृपाल त्रिपाठी, लखनऊ
46. सुरेन्द्र नाथ त्रिवेदी, लखनऊ। 9335230767
47. राकेश कुमार शुक्ल, लखनऊ। 9005409001
48. विमल कुमार जेटली, लखनऊ– 9451246381
49. अनामिका शर्मा, नई दिल्ली । 09990455986

50. श्री एस.के. मिश्रा लखनऊ
51. डॉ. परेश शुक्ल, लखनऊ। 9793346656
52. डॉ. एस.एन. शुक्ल, आई.ए.एस., लखनऊ। 9415464288

बाहरी प्रांतों के सदस्य

1. डा0 आर0के0 त्रिपाठी, देहरादून, उत्तराखण्ड। 9935478815
2. यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली। 9818434377
3. राम अवस्थी, ट्रांबे, मुंबई। 9820026914
4. नीरज त्रिवेदी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड 9837077546
5. अशोक कुमार तिवारी, जबलपुर म0प्र0 9300104481
6. अशोक कुमार पाठक, होशंगाबाद। 9407290639
7. वैज्ञानिक अलका दीक्षित, दिल्ली
8. श्रीमती सविता दुबे, धारवाड, कर्नाटक
9. देवेन्द्र कुमार शुक्ला, जयपुर, राजस्थान। 9414075174
10. पं0 शिव शंकर तिवारी, सिकंदराबाद, आंध्र प्रदेश
11. शिशिर कुमार बाजपेई फरीदाबाद हरियाणा 9899041178
12. प्रदीप चंद्र तिवारी, जयपुर। 9414097679

दूरस्थ देश के सदस्य

1. विजय शुक्ला द्वारा गिरीश चन्द्र शुक्ला, सिडनी

■■■

बधिक

पत्रकार ने बधिक से पूछा– ''लोगों को फाँसी देते समय आप कैसा महसूस करते हो?'' बधिक ने बड़ी शालीनता से उत्तर दिया– "वैसा ही जैसा आप इंटरव्यू लेने में करते हैं। फाँसी का फंदा बनाते समय मेरा पूरा ध्यान रहता है कि दोषी को कम से कम कष्ट हो।"

पत्रकार व्यंग्य से मुस्कराया–"तो आप भी कलाकार हैं!"

"जी हाँ, मैं एक डाक्टर के भाँति महसूस करता हूँ जो मरीज के सड़े गले हिस्से को इसलिए कुशलता से काट देता है जिससे मरीज की जान बच सके।"

पत्रकार ने बधिक से कहा–''आप को कोई ग्लानि या पाप का भय नहीं होता?"

"नहीं, बिलकुल नहीं! क्या सीमा पर हमारी रक्षा में तत्पर सैनिक को पाप लगता है जो हमारी रक्षा में दुश्मन को गोली मार देता है? क्या वह जज जिसने दोषी को मृत्यु दण्ड दिया वह पाप का भागी है? यदि नहीं तो मैं भी अपना कार्य करता हूँ और इसमे मेरा कोई व्यक्तिगत दोष नहीं।"

स्तब्ध पत्रकार को लगा जैसे उस निरक्षर बधिक ने उसे 'गीता ज्ञान' सुना दिया जिसमे कहा है कि आततायी को मारने में कोई पाप नहीं, 'कर्तव्य–कर्म' करने से प्रारब्ध नहीं बनता।

चिंटू की चिट्ठी

– इं. कृष्ण कुमार

मेरे प्यारे दादू!

पहले मुझे ये बताओं कि दादू में छोटे उ की मात्रा लगती है या बड़े ऊ की। आप बताओ यहाँ मैं किससे पूछूँ? मम्मी से तो पूछ नहीं सकता। दुनिया भर के सवाल करेगी। दादा जी को क्यों चिट्ठी लिख रहे हो? उसमें क्या लिखने वाले हो?

दादू, आज मैं खूब रोया। अब आप कहते हैं कि शेर बच्चे रोते नहीं हैं। लेकिन ये बताइये कि जब मम्मी मारेगी तो रोना तो पड़ेगा ही। आज मम्मी ने मुझे खूब पीटा। क्यों? इसलिये क्योंकि मैं इंग्लिश में फेल हो गया हूँ। इंग्लिश के पेपर में मेरी सारी स्पेलिंग गलत हो गयीं। घर में जब भी मुझे कोई स्पेलिंग नहीं आती, मैं उसे गूगल में सर्च कर लेता हूँ पर इम्तहान में मुझे मोबाइल ले जाने ही नहीं दिया। अब बताओ मैं क्या कर सकता था?

दादू, ये मम्मी पापा को हो क्या गया है? दोनों, चाहे ड्राइंग रूप में हों, या खाने की टेबल पर, या अपने बिस्तर में, हर समय अपने–अपने मोबाइल को सामने रख उस पर अंगुलियाँ चलाते रहते हैं। न तो आपस में बात करते हैं और न ही मुझसे कुछ बोलते हैं। मैं अकेला पूरे घर में घूम–घूम कर बोर हो जाता हूँ। मेरा मोबाइल ही मेरा दोस्त था, उसको भी मम्मी ने छीन लिया। अब मैं करूँ भी तो क्या? दादू, मैं उस मोबाइल को अपने तकिये के नीचे रख कर सोता था। सवेरे उठ कर, सबसे पहले उसमें कॉमिक्स लगा कर देखता था। अब जब से मोबाइल छिना है, मुझे नींद ही नहीं आती। दादू मुझे मेरी मम्मी से मेरा मोबाइल दिला दो।

दादू, आपको एक बात बताऊँ, मम्मी पापा को मत बताइयेगा। मैंने पापा की जेब से एक सौ रुपये का नोट निकाल लिया है। लेकिन मेरा दोस्त कपिल कहता है कि नया मोबाइल सौ रुपये से बहुत ज्यादा का आता है। मैं आपको अगर वो सौ रुपये का नोट दे दूँ तो क्या आप मुझे नया मोबाइल दिला देंगे?

दादू, पड़ोस से सोनू के कान में बड़ा दर्द हो गया है। वो कहता है कि उसके कान में हर दम सूँ सूँ होता रहता है। डॉक्टर ने बताया है सोनू के

कान का दर्द मोबाइल के कारण है। एक मज़ेदार बात बताऊँ जो डॉक्टर सोनू को देखने आया था, वो भी हरदम कान से मोबाइल लगाये रहता था। मैं सोचता हूँ कि अब उसके कान में भी सँ सूँ होगी।

दादू, आपने एक बार मुझे माचिस की डिब्बी से मोबाइल बना कर दिया था। वो मोबाइल कितना अच्छा था। हम दोनों उसे कान में लगाकर एक कमरे से दूसरे कमरे तक बातें कर लेते थे। बस उसमें इंटरनेट ही तो नहीं था। अबकी बार जब आप आओगे तो मुझे एक वैसा ही मोबाइल बना देना।

दादू, कल हम स्कूल की ओर से पोस्ट ऑफिस गये थे। वहाँ पोस्ट मास्टर अंकल ने बताया था कि अगर चिट्ठी को लिफाफे में रखकर, उस पर टिकट लगा कर, पता लिख कर लेटर बॉक्स में डाल दूँ तो वो आपके पास पहुँच जायेगी।

इसलिये ये चिट्ठी मैं लेटर बॉक्स में डाल रहा हूँ। इसको पाते ही आप तुरन्त मेरे पास आ जाना। आओगे ना प्लीज। मुझे मोबाइल जो दिलाना है।

आपका चिंटू

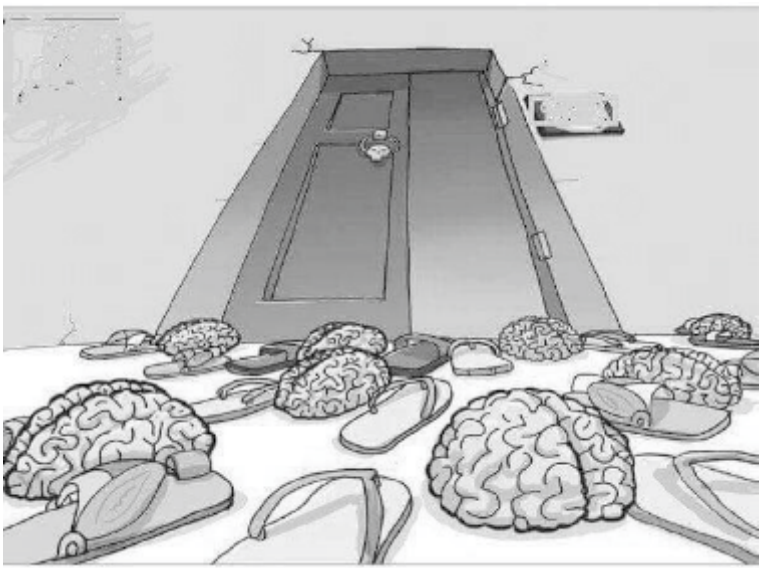

विश्व का सबसे सहिष्णु देश–भारतवर्ष

– योगेन्द्र शर्मा

देश में सहिष्णुता का मुद्दा आज भी ज्वलंत है। आशा है चंद 'असहिष्णु' मानुस इसे भविष्य में भी ज्वलंत बनाए रखेंगे। आइए, हम कितने किसके प्रति, कब तक सहिष्णु रहे हैं, इसकी निष्पक्ष पड़ताल करते हैं। प्रारंभ के लिए एक श्लोक पठनीय है–

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र, रुद्र, मरुतः स्तुवन्ति दिव्यैः स्तवैः।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः गावन्ति यं सामगाः।।
अर्हन्नित्यथ जैन शासनरताः कर्मेति मीमांसकाः।
सोऽयं नो विद्धातु वांछित फलं त्रैलोक्य नाथोहरिः।।

इस देश में विभिन्न वृत्तियों के देवता व मनुष्य उस परमपिता को मनवांछित विधियों से भजते रहे हैं। 'वसुधैवकुटम्बकम्' व 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का नारा सर्वप्रथम इसी धरती से बुलंद हुआ था। यहाँ अपना इष्टदेव चुनने व इच्छानुसार उपासना करने की लोकतांत्रिक छूट भी थी। इस धरा पर सगुण निर्गुण ब्रह्म के उपासक साथ साथ रहते थे। जैन धर्मावलंबी अर्हन् को पूजते थे, मीमांसक कर्म को ही ईश्वर मानते थे, बुद्ध प्रकृति को ही ईश्वर मानते थे व समता में विश्वास रखते थे। सांख्य दर्शन वाले सृष्टि को जड़ (प्रकृति) व चेतन (ईश्वर) का सम्मिलित–स्वरूप मानते थे। चार्वाक यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋण कृत्वा घृतं पीबेत् में विश्वास रखता था। संपूर्ण असुर समाज और अरबपति माल्या जैसे असंख्य आज भी उनके अनुयायी हैं। श्रीराम के समकालीन ऋषि जाबालि थे, जो 'जगत् सत्यं ब्रह्म मिथ्या' के विचार को मानते थे। कई विचारक ऋषि इस धरती पर हुए, जिन्हें साम्यवादियों का पूर्वज या पहला साम्यवादी कहा जा सकता है। वस्तुतः हिंदुत्व ईश्वर संबंधी समस्त विचारों का समुच्चय था। प्रसिद्ध दर्शन शास्त्री व भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन का कथन याद दिला दूँ–

''हिन्दुत्व कोई धर्म नहीं, अपितु एक प्रकार की जीवन–शैली है।'' इस धरती पर विरोधी विचार धारा वाले के सिर की कीमत कभी नहीं लगाई गई, न ही कोई ईश निंदा का कानून बनाया गया। शास्त्रार्थ एवं विचार–विमर्श का प्रचलन रहा।

हिन्दुत्व के नियम निर्माता ब्राह्मण थे। ब्राह्मण, अर्थात् जो ब्रह्म को जाने। मानवीय कमजोरी के कारण ऐसे नियम बने, जिनमें ब्राह्मणों का ही वर्चस्व था। हर संस्कार, हर उत्सव का नेतृत्व ब्राह्मण पुरोहित ही करता था, उसे ही सर्वाधिक सम्मान व दान प्राप्त होता था। प्रारम्भ में ब्राह्मणत्व एक पद

था। क्षत्रिय राजा 'विश्वरथ' तपोबल से ब्रह्मर्षि विश्वामित्र कहलाए। उसी प्रकार दस्युकर्म में लीन, अवर्ण बाल्मीकि भी घोर तप द्वारा ब्रह्मर्षि कहलाए। वेदव्यास भी अवर्ण होने पर भी तपोबल द्वारा ब्रह्मर्षि माने गए। श्रीहनुमान् जनजाति (वानर) के होते हुए भी अपने सद्गुणों, ज्ञान व भक्ति के कारण रुद्रावतार माने गए, आज वह देश के सर्वाधिक लोकप्रिय व पूजित देवता हैं; भारत देश की समरसता के प्रतीक हैं।

'रमयेति इति रामः' अर्थात् जो आनंदित करे, वह राम। हमारे श्रीराम, घट–घटवासी थे, चौदह वर्ष का वनवास देनेवाली माँ कैकेयी के प्रति भी अति सहिष्णु थे। अपनी धर्मपत्नी को अपहरण कर उसे बंदी बनाने वाले रावण के प्रति भी उतने ही सहिष्णु कि उसे मनाने को दो–दो शांतिदूत भेजे।

राम की तरह कृष्ण भी घट–घटवासी थे। 'कर्षति इति कृष्णः' अर्थात जो आकर्षित करे, वह कृष्ण। वे भी इतने सहिष्णु कि भरी सभा में शिशुपाल की निन्यानबे गालियाँ सह गए। और अत्याचारी कंस द्वारा अपने आठ बहन–भाइयों की हत्या भी सह गए। इस्मत चुगताई (प्रसिद्ध उर्दू लेखिका) ने कृष्ण को सर्वाधिक प्रगतिशील माना है, क्योंकि उन्होंने अपनी बहन को तमाम विरोधों के बावजूद अपने इच्छित वर से विवाह करने की छूट दी और 'गीता' जैसा महान ग्रंथ हमें दिया। उसी प्रकार अल्लामा इकबाल (सारे जहाँ से अच्छा के रचयिता) ने श्रीराम को 'इमामे हिंद' कहा। भूत–प्रेतों, चुड़ैलों जैसे उपेक्षितों का संग करने वाले शरीर पर भस्म रमाने वाले संन्यासी भोलेनाथ आदि वामपंथी थे। कहने का तात्पर्य यह कि मार्क्स ने तो वाम पंथ को आंदोलन का रूप दिया, सत्ता का स्वाद चखाया। परन्तु वह तो हमारी धरती पर आदिकाल से था। इतने संदर्भ देने का मेरा अभिप्राय यह है कि इस देश में सभी कुछ 'बुरा' नहीं था। दूसरे पुजारी या पुरोहितों का वर्चस्व थोड़ा–बहुत धर्म में रहा है।

मनु द्वारा प्रदत्त वर्ण व्यवस्था क्षमतानुसार कार्य–विभाजन मात्र था, जिसका स्वरूप धीरे–धीरे बिगड़ता गया। भले ही निकृष्ट हो, ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण और शूद्र का पुत्र शूद्र माना गया। यद्यपि ऋषि पुलत्स्य के नाती व विश्रवा ऋषि के पुत्र लंकापति रावण ने 'राक्षस' संस्कृति प्रचारित की व स्वयं को राक्षस कहा। कुछ परिस्थिति की बलिहारी, कुछ हमारी मूढ़ता एक विशाल फलक वाला धर्म, देवी–देवताओं कर्मकांड और वर्णाश्रम धर्म में सिमट गया। फलतः स्त्री और शूद्र दोनों का ही दमन हुआ। कर्ण, एकलव्य से लेकर आम्बेडकर और वेमुला तक हम 'असहिष्णु' ही रहे। उसी प्रकार सीता, अहल्या, द्रौपदी से लेकर निर्भया तक के साथ अन्याय–अत्याचार हुआ। यद्यपि समस्त विश्व के किसी भी देश में सौ प्रतिशत समरसता असंभव है। कहीं भी चले जाइए इस पृथ्वी पर, गोरी चमड़ीवाले कालों से, बुजुर्आ सर्वहारा से, सुन्नी शिया से, स्थानीय लोग परदेसियों से, स्त्रियों और दलित व गरीब

तबके की हालत विश्व में कहीं भी संतोषजनक नहीं है।

निराकार ब्रह्म की पूजा सांसारिक रूप से दुष्कर कार्य था, अस्तु साकार की पूजा (मूर्तिपूजा) अस्तित्व में आई। मूर्तिपूजा की राह अति फिसलन भरी थी। इसमें भक्त अपनी भावताओं को, विकारों को अपने इष्ट पर ही आरोपित कर देता था। पंडे–पुजारियों ने लोभ व कामवश, मंदिरों में, हीरे–जवाहरात, सोने चाँदी के ढेर लगा दिए। देवदासियाँ वहाँ नृत्य करने लगीं। प्रश्न तो तब भी उठा था कि क्या तुम्हारा भगवान इतना लोभी है कि धन–संपदा से प्रसन्न हो जाएगा? या इतना कामी कि देवदासी के नृत्य से रीझ जाएगा? यदि अकूत संपदा मंदिरों में थी तो सुरक्षा व्यवस्था होनी चाहिए थी। बहरहाल इस वैभव का ऐसा हल्ला मचा कि विश्व के सारे लुटेरे इन मंदिरों पर चढ़ दौड़े। हमारे चार प्रमुख मंदिर तोड़े गए, लूटे गए। मूर्तियों व भक्तों का अपमान हुआ, धर्मग्रंथ जलाए गए। भयवश कुछ धर्मग्रंथ तिब्बत के मठों में पहुँचा दिए गए (महापंडित राहुल सांकृत्यायन साक्षी हैं)।

अब मैं असली मुद्दे पर आता हूँ, घरवालों के साथ हम भले ही असहिष्णु रहे, परन्तु बाहर से आनेवालों के प्रति हम बेहद सहिष्णु रहे हैं। हम से बढ़कर सहिष्णु इस धरा पर दूसरा कौन हो सकता है? हमने अपने मूर्तिभंजकों को माफ कर दिया। जिन्होंने हमारी माटी और हमें प्यार दिया, बदले में हमने भी उन्हें भरपूर प्यार दिया। एक लंबी माला है–बादशाह अकबर, शहजादे दारा शिकोह, रहीम, रसखान, अमीर खुसरो, शेख सलीम चिश्ती सहित सूफी मत के सभी आदरणीय संत, मौलाना आजाद, सीमांत गाँधी आदि को प्यार के बदले प्यार मिला। एक भुलाया गया नाम याद दिला दूँ, बरेली के एक मुसलमान सेठ मोहतरम फजलुर्रहमान उर्फ चुन्ना मियाँ, जिन्होंने शहर में लक्ष्मीनारायण मंदिर का निर्माण कराया। वहाँ ईंट, गारा, सीमेंट ढोकर कार सेवा भी की। मंदिर का उद्घाटन देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने किया था। शहर की जनता अब भी उस मंदिर को 'चुन्नामियाँ के मंदिर' के नाम से याद करती है, और उन्हें 'रुहेलखंड का गाँधी' के नाम से।

मामला अदालत में था, परन्तु चंद असहिष्णुओं ने श्रीरामजन्म भूमि बाबरी ढाँचा तोड़ दिया। बदले में चंद असहिष्णुओं ने बंगलादेश सहित सौ से अधिक मंदिर और उनकी मूर्तियाँ तोड़ डालीं (लज्जा की लेखिका तस्लीमा नसरीन गवाह है)।

हम बाहरवालों के प्रति कितने सहिष्णु रहे हैं। इसे जानने के लिए विश्व इतिहास के कुछ अध्याय पढ़ने पड़ेगा। यहूदी जाति ने जुल्म की इंतिहा देखी। जर्मन के तानाशाह हिटलर ने हजारों यहूदी गैस–चैंबर में भरकर, 'डेथ स्क्वाड' के सामने खड़े करके कत्ल कर दिए। हजारों मारे भय के बेघर गए। इन अंतर्राष्ट्रीय दलितों के साथ कहीं भी सद्व्यवहार नहीं हुआ। विश्व

के हर देश में इनकी अच्छी खासी जनसंख्या है। पारसी एक और ठुकराई गई कौम थी, सब जगह ठुकराए जाने के बाद उन्हें इसी देश में ही शरण मिली। आज पारसी एक खुशहाल समुदाय है। बांग्लादेशी भी इस देश में बेहिसाब आए। चीन के सताए तिब्बती भी आए। यहाँ तक कि दुनिया का ठुकराया कोई भी व्यक्ति हो, उसे हमने सिर–आँखों पर बैठाया। अतिथि देवो भव के भाव से सादर आश्रय दिया। वस्तुतः भारतवर्ष एक 'अंतर्राष्ट्रीय धर्मशाला' है, जिसमें न द्वार है, न ताला। आनेवाले को आने दो (क्या पता वह अपना वोटर बन जाए) तथा एक बात और, जो भी यहाँ बसा, पहले से अधिक खुशहाल हो गया।

देश के विभाजन के समय पाकिस्तान से आए पंजाबियों, सिंधियों ने कुछ वर्षों में ही अपने माथे पर लगे 'शरणार्थी' के लेवल को उतार फेंका। आज अपनी मेहनत, हमदर्दी, ईश्वर की कृपा से एक औसत हिंदुस्तानी से भी अधिक खुशहाल हैं। इसके विपरीत पाकिस्तान, एक आदर्श इस्लामिक राज्य, को दिल में बसाए जब हिन्दुस्तानी मुसलमान अपने 'सपनों के देश' पहुँचे तो उनका स्वप्न भंग हो गया। उनके माथे पर 'मुहाजिर' (शरणार्थी) का लेबल अब भी चस्पा है। उनका आंदोलन 'मुहाजिर कौमी मूवमेंट' यह इंगित करता है, मुहाजिर मुसलमान एक अलग कौम है। यही नहीं जहाँ पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को जनसंख्या लगातार घट रही है, हिन्दुस्तान में दिन – रात चौगुनी बढ़ रही है। कहिए, पाकिस्तान की तुलना में हम अधिक सहिष्णु हैं या नहीं। वैसे अपने इस नापाक पड़ोसी के प्रति हमारी सहिष्णुता का इतिहास भी बहुत पुराना है। इसकी गीधदृष्टि जम्मू कश्मीर, पंजाब अनेक मुस्लिम बहुल क्षेत्रों पर है। यह इस देश में कई छोटे छोटे पाकिस्तान भी बनाना चाहता है। वह हिन्दुस्तान को बर्बादी तक हमसे युद्ध चाहता है। उसने तीन–तीन युद्ध हम लड़े। यद्यपि तीनों बार हमारी सेना से दुश्मनों को धूल चटाई और तीनों बार हमारे राजनेता इसका कोई राजनीतिक लाभ नहीं उठा पाए, 1964 और 1971 में जीती गई भूमि लौटा दी गई। बांग्लादेश युद्ध में तो हमारी सेना ने विश्व का सबसे बड़ा आत्मसमर्पण करवाया। युद्ध विराम के तुरन्त बाद भारतीय सेना बांग्लादेश से हट गई। यदि कुछ वर्ष हमारी सेना वहाँ रुकी रहती तो भारत के प्रबल समर्थक बंगबंधु शेख मुजीब सपरिवार न मारे जाते। इसके बावजूद कई वर्ष तक बांग्लादेश भारत के विरोध में खड़ा रहा।

पाकिस्तान की शक्ति भले ही हम से आधी रही हो परन्तु अपनी आक्रामकता के कारण उसने लंबे अरसे से हमारी नाक में दम कर रखा है। वह कश्मीरियों के आत्मनिर्णय, 'कश्मीर में मानवाधिकार हनन' के मसले अंतराष्ट्रीय मंचों पर उठाता रहा है और हम किसी गुनाहगार की तरह सफाई पेश करते रहे हैं। हमारी सहिष्णुता देखिए कि हम मुहाजिरों, बलूचों, बंगालियों, सिंधियों, गुलाम कश्मीरियों के आत्मनिर्णय का मुद्दा कहीं भी नहीं

उठा पाए।

हमारे 'जबर' पड़ोसी चीन ने तिब्बत, जो एक स्वतंत्र राज्य था, को अपने फौजी बूटों के तले रौंद दिया। हजारों तिब्बती खेत रहे, हजारों बेघर होकर हिन्दुस्तान भाग आए। तिब्बत की करुण पुकार हमने अनसुनी कर दी, ताकि चीन नाराज न हो जाए। 1962 के युद्ध में चीन ने हमें जान–माल की भारी क्षति पहुँचाई, आज भी वह हमारी हजारों वर्ग किलोमीटर जमीन हथियाए बैठा है। विस्तारवादी चीन सारे नॉर्थ–ईस्ट, अरुणांचल प्रदेश पर भी अपना हक जाता रहा है। माओवाद, नक्सलवाद के बहाने बंगाल, बिहार, असम, नेपाल में अपने पाँव पसार रहा है। उसकी एक प्रायोजित पार्टी सी.पी. आई. (एम) उस हिंसा को हर प्रकार से जायज ठहरा रही है।

हमारी सहिष्णुता की कहानियाँ अनंत हैं, असीमित हैं। चीन–पाकिस्तान दोनों सीमाओं पर युद्ध विराम के निरंतर उल्लंघन होते रहे हैं। हमारी सेना को केवल जवाबी कारवाई की अनुमति रहीं है। सीमा पार से गोलियाँ आती रहती हैं। निर्दोष फौजी व नागरिक मारे जाते रहे हैं और हम उन्हें प्रत्युत्तर में सफेद कागज (विरोध–पत्र) पकड़ाते रहे हैं। यह हमारी सहिष्णुता की ही पराकाष्ठा है कि हमने विश्व में सर्वाधिक विरोध–पत्र देने का विश्व रिकॉर्ड बनाया है (लिम्कावाले जान लें)।

चंद भरे पेटवाले लोग बीस–बीस सिक्योरिटी गार्डस से घिरे पाँच सितारा होटल में शैंपेन का गिलास थामे इस देश को 'असुरक्षित' बता रहे हैं। आमिर खान साहब अपनी मैडम को याद दिलाते कि यह वही 'सहिष्णु' देश है, जिसने दिलीप कुमार (मो. युसुफ खान), शाहरुख खान, सलमान खान, सैफ अली खाँ आदि और उनके पति सहित अनेक मुस्लिम चेहरों को लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचा दिया हैं। क्या उन्हें याद है कि डॉ. जाकिर हुसैन, फखरुद्दीन अली अहमद, कलाम साहब आदि देश के सर्वोच्च पद को सुशोभित कर चुके हैं। पड़ोसी किसी देश में किसी एक हिन्दू या ईसाई नागरिक को भी मिली है इतनी ऊँचाई?

विडंबना यह कि असहिष्णुता का मुद्दा उठाने वाले स्वयं हिन्दू आराध्य देवों की निंदा करना अपना प्रिय शगल समझते हैं। उन्हें 'साफ्ट टार्जेट' माना जाता है। अब 'स्त्री–शक्ति' की प्रतीक दुर्गा माँ का भी मजाक उड़ा दिया।

इधर असहिष्णुता पर ऐसी मारा–मारी मची कि अनेक असहिष्णु बुद्धिजीवियों में पुरस्कार सरकार के मुँह पर मारने की प्रतियोगिता चल पड़ी। टी.वी. पर 'गुस्ताखी माफ' ने इसे भली अभिव्यक्ति दी थी। वस्तुतः जब आप किसी वाद से जुड़ जाते हैं तो किसे गालियाँ देनी है और किसकी प्रशस्ति करनी है। इसकी पूर्व निर्धारित सूचियाँ हाई कमान आपको सौंप देता है। हाईकमान ही वह खूँटा है, जिसमें आपको आजादी की रस्सी बँधी होती है।

जितनी बड़ी रस्सी, उतनी बड़ी आपकी औकात।

कितनी सहिष्णु सरकार थी कि उन असहिष्णुओं को आजीवन प्रतिबंधित नहीं किया गया। ऐसे लोगों को पुरस्कार दे दिए गए, जिन्हें उसकी कद्र नहीं थी।

पंडित नेहरू देश के लोकतंत्र के पुरोधा थे। विडंबना देखिए कि उनकी महान् पार्टी ने साम्यवादियों के साथ साँठ–गाँठ करके उनके नाम पर ही बने विश्वविद्यालय को राष्ट्रद्रोहियों की प्रयोगशाला बना दिया। हमारे लोकतंत्र के मंदिर को ध्वस्त करने का इरादा रखनेवाले अपराधी की बरसी मनाई गई, भारत की बरबादी की कामना की गई। आपके इस गुरु ने स्वीकार किया है कि उसने संसद् को नेस्तनाबूद करने की कोशिश की और वह भी अपनी गरीबी के कारण। आपको यह घटिया दर्जे का मुजरिम याद आता है, परन्तु संसद् को बचाने में अपने प्राण न्यौछावर करनेवाले तीन पुलिसकर्मी याद नहीं आते। सोचिए, यदि आपका गुरु अपने इरादों में कामयाब हो जाता तो कई सांसद मारे जाते। उन सांसदों में कुछ कांग्रेसी, साम्यवादी या कश्मीरी भाई भी हो सकते थे। आप अहसानमंद नहीं है, उन रणबाँकुरे जवानों के, जिनके अदम्य साहस, त्याग, पराक्रम से अभी तक आपकी सीमाएँ सुरक्षित हैं।

हमारे वामपंथी विचारक देशप्रेम की भावना का मजाक उड़ाते हैं। हम दो विस्तारवादी पड़ोसियों चीन और पाकिस्तान से घिरे हुए हैं, जो इस समूचे देश को घोलकर पी जाना चाहते हैं। इन परिस्थितियों से केवल देशप्रेम और देशप्रेम ही हमें उबार सकता है। संसार में प्रत्येक गुण सापेक्ष होता है। निष्पक्ष दृष्टि से देखें तो यह देश आपको संसार का सर्वाधिक सहिष्णु देश दिखाई देगा। भले ही कुछ असहिष्णु इसे अंधों मे काना राजा क्यों न कह दें।

आखिर एक सौ पच्चीस करोड़ का देश है, चंद अपवाद हो सकते हैं। पुनश्च, डाकू और सैनिक दोनों हिंसक होते हैं। एक स्वार्थवश ऐसा करता है। दूसरा देशप्रेमवश। दुर्भाग्यवश हमारे तथाकथित बुद्धिजीवी डाकुओं/अपराधियों की प्रशस्ति में व्यस्त हैं।

3/21 सी, लक्ष्मीबाई मार्ग
रामघाट रोड, अलीगढ़
दूरभाष : 09897410320

ना सबूत है, ना दलील है, मेरे साथ रब्बे–जलील है

–इं. देवकी नन्दन 'शांत'

ना सबूत है, ना दलील है, मेरे साथ रब्बे–जलील है।

तेरी रहमतों में कमी नहीं, मेरी एहतियात में ढील है।

मुझे कौन तुझसे अलग करे, मैं अटूट प्यास तू झील है।

तेरा नाम कितना है मुख्तसर, तेरा जिक्र कितना तवील है।

(श्री श्री रविशंकर के 'आर्ट आफ लिविंग' कार्यक्रम के अंतर्गत यह सूफियाना क़लाम 'सचिन लिमिए' ने सस्वर प्रस्तुत किया जिसका केन्द्रीय भाव था कि वो एक निर्दोष सभा मण्डल (रब्बे जलील) की तरह ऐसा अस्तित्व है जिसने हमारे होने के विषय में सबूत और दलील नही दी जा सकती। इसी भाव पर मेरी दो गजलें प्रस्तुत हैं।)

(1)

मुझे अस्तित्व ने परखा बहुत है,
कि मैंने भी उसे सोचा बहुत है।
उसी कर जिक्र करती हैं ये साँसे,
महकता भी वो खुशबू सा बहुत है।
मेरी जानिब वो झाँके कनखियो से,
मेरे हिस्से में बस इतना बहुत है।
मिलेगा वो अगर पहचान लेगा,
कि उसने तो मुझे देखा बहुत है।
हम उसके पास ज़िद करके चलेगे,
सुना है 'शान्त' वो तन्हा बहुत है।

(2)

कि मैं अस्तित्व को 'अज्ञेय' समझूँ ,
वो सबका है सभी में उसको देखूँ।
वो है संकेत भी वो कर रहा है,
सबूतों को मगर कैसे दिखाऊँ।
बग़ैर उसके जिये कोई तो कैसे,
मैं ज़िन्दा हूँ तो क्या मरकर बताऊँ।
मेरे हर कार्य में सहयोग उसका,
बिना उसके मैं कुछ कर भी न पाऊँ।
वो चाहे 'शान्त' जल सा मन हो निर्मल,
लहर बनकर वो कब आए न जानूँ।

मुक्ति और मिलन

मुक्ति और मिलन दोनों में विरोधाभाव भाव है। मिलन तो बंधन है, वहीं सभी बंधनो को तोड़ना ही मुक्ति है– 'बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात्'। भारतीय संस्कृति व दर्शन की जो सबसे बड़ी विशेषता है वह है– 'विषमता में समता और अनेकता में एकता।'

इसी मूल–मंत्र के चलते अध्यात्म में मुक्ति और मिलन सरीखे परस्पर विरोधी एक दूसरे के पर्याय बने हैं।

मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है मोक्ष! इसे मुक्ति कहते हैं। जीवात्मा का परमात्मा से मिल जाना सभी जीवों का अंतिम अभीष्ट है। परमात्मा से मिलन तभी संभव है जब हम सभी सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाऐं।

इसलिए भारतीय दर्शन में मिलन और मुक्ति और मिलन एक ही अर्थवाहक हैं।

क्या यौवन रीता हो जाता!

प्रो. ओम् प्रकाश पाण्डेय
पूर्व विभागाध्यक्ष (संस्कृत)
लखनऊ विश्वविद्यालय

कुछ रस–कन ढरका देने से क्या यौवन रीता हो जाता ?
यौवन का जादू कुछ ऐसा, कली–कली ने ली अँगड़ाई,
मधुर–मंजरी ने रसाल के तरु पर मधु–यामिनी मनाई,
पर मेरे उदास आँगन में उत्सव की वह रात न आई।

ऋतुओं के राजा सुकुमार ! केवल इतनी बात बता दो,
एक सुमन भर दे देने से क्या मधुवन रीता हो जाता ?

हर प्रभात में उषा सुनहरी साड़ी पहन–पहन मुस्काती,
रजत–रश्मियाँ धीरे–धीरे वासर की बारात सजातीं।
छलक–छलक कर चपल चाँदनी रही सुधा का कलश लुटाती,
पर मेरे नीरस जीवन में वही अमावस छाती जाती।

जग भर को आलोकित करने वाले हे देवता! बता दो,
एक किरन भर दे देने से शुभ्र गगन रीता हो जाता ?

डसती हुई रात पुरवाई अंग–अंग में टीस जगाये,
बह निशीथ के अन्त्य चरण में पछुआ भी जब आग लगाये।
द्वार द्वार निर्लज्ज अनिल जब गाता है आवारा होकर,
मेरे वातायन में भी तब वह प्रवेश करते शरमायें।

ओ उन्चास मरुद्गण! बोलो, प्रबल प्रभंजन! कुछ मुँह खोलो
व्यजन डुला देने भर से क्या मलय पवन रीता हो जाता है ?

उमड़े मेघ देखकर हमने कितनी आशाएँ थीं पालीं,
गरज–गरज कर बादल तुमने नभ से धरा गुँजा थी डाली।
निश्चय ही वर्षा भी तुमने कहते हो तो, की ही होगी,
पर चातक की छोटी–सी यह चंचु–पुटी अब भी है खली।

ओ पर्जन्य! प्रश्न का उत्तर माँग रहा यह प्यासी पाँखी,
बिन्दु मात्र जल–कण देने से पावस–घन रीता हो जाता ?

करुणामय ! पा स्पर्श तुम्हारा, मत यह अभाव हो जाते,
छूकर किंचित् दृष्टि तुम्हारी, कितने रंक राव हो जाते।
हे औढरदानी! मेरी ही पारी जब पाने की होती,
तब तुम छोड़ दान की लीला, साहूकार–साव हो जाते।

निधियों के सम्राट्! बता दो मेरी मलिन पोटली में भी,
कुछ कण भर आ जाने से क्या अक्षय धन रीता हो जाता ?

जहाँ–जहाँ देखा है तुमने, वहीं वहीं मधुमास खिल गया,
आँखों में खिल गये कमलदल, धरती पर अकाश खिल गया,
अधरों से उधार ले–लेकर, बुलाकर बुलाकर जंगल–जंगल
नयनों ने लाली बाँटी तो उखड़ा हुआ पलाश खिल गया।

पर मृगनयनी! दृष्टि तुम्हारी मेरी ओर नहीं आ पाई,
चितवन एक डालने से क्या नयनयुग्म रीता हो जाता?

कैकेयी

– श्रीमती उर्मिला मिश्रा

सहस्रों वर्ष बीत गये, परन्तु आज भी मैं कठोर, निष्ठुर, कलंकिनी मानी जाती हूँ। लोग अपनी कन्याओं का नाम भी मेरे नाम पर नहीं रखते हैं।

परन्तु क्या मैं सचमुच ऐसी हूँ? क्या मैंने जो किया वह अनुचित था। सोचो, यदि राम वन न गये होते, राम राजा बन अयोध्या में रहे होते , तो रावण का वध कैसे होता? कैसे होता दुष्टों का संहार?

फिर इसमें राम मन था। यदि इसमें राम का मन ना होता तो मैं यह कदापि नहीं कर सकती थी। राम ने मुझसे वचन लिया था। कहा था, ''माँ, यह कार्य आपके अतिरिक्त कोई भी नहीं कर सकता। पिताश्री महाराज मेरा राज्याभिषेक करना चाहते हैं। आप तो जानती हैं मेरा पृथ्वी पर आना किस लिए हुआ? आपके दो वचन पिता जी के पास थाती रूप में हैं, आप उन्हे माँग लीजिये। एक से मेरे अनुज भरत का अभिषेक और दूसरे से मेरा वनवास।''

हे राम! तुम यह क्या कह रहे हो, यह मैं कैसे माँगू? मेरे प्राणाधिक प्रिय पुत्र राम को वनवास और भरत को युवराज। नहीं राम! मैं यह नहीं कर पाऊँगी। लोग क्या कहेंगे ? मुझे दुष्टा, स्वार्थी, निष्ठुर। नहीं राम! जिस पुत्र से मैंने कभी ऊँचे स्वर में बात नहीं की, उस पुत्र के लिए वनवास, वह भी चौदह वर्षो का, नहीं राम यह नहीं होगा।

''नहीं माँ, आपको यह करना ही होगा। आपको मेरी शपथ।'' क्या करती? यह पता था, मेरा यह कलंक जन्म–जन्मान्तरों तक नहीं मिटेगा। पर मैंने विश्व–उपकार के लिए, ऋषि, मुनि, वेद एवं मानव कल्याण के लिए स्वीकार किया।

राम वन चले गये। राम का विछोह महाराज नहीं सह सके, उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। सब मुझे भाँति–भाँति के शब्द बाणों से व्यथित करने लगे। मैंने सब सहा, सब सुना, परन्तु अपना मुँह नहीं खोला। क्या कहती? मेरे पुत्र भरत ने भी नहीं छोड़ा। उसने भी अपशब्द कहें। भरत ने फिर मुझे माँ नहीं कहा, कभी माँ कहकर मेरे पास नहीं आया।

राम प्रसन्न थे। मैं दुःखी थी। दोहरा दुःख था मुझे। रानियों के साथ मैं भी तो विधवा हुई थी। मेरे पास ना तो पति था न पुत्र। मैं अपना दुःख किससे कहती? किससे बाँटती अपना दुःख। कुछ और हो सकता है कि अपना पुत्र ही मुँह मोड़ ले।

मैंने तो जीवन भर का कलंक सहा। आज भी सह रही हूँ। युगों–युगों तक मैं पति–हन्ता पुत्र–विरोधी समझी जाऊँ। कोई भी मेरी अन्तर्वेदना को समझने वाला नहीं है, एक राम को छोड़ कर। किन्तु वह भी मेरे पास नहीं है। वह तो चौदह वर्ष तक तो यह कलंक मुझे अकेले ही ढोना है। पर क्या चौदह वर्षो में पीड़ा कम हो जाएगी या समाप्त हो जाएगी ? नहीं लोगों ने मुझे न तब क्षमा किया था, न अब। मुझे तो बोझ ढोना ही है। यह तो अपना अपना भाग्य है, विधाता ने मेरा भाग्य ना मालूम किस कुघड़ी में लिखा था।

मैं अपना दुःख सबके सामने इसलिए व्यक्त कर रहीं हूँ कि संभवतः कोई मेरे दुःख को समझ सके। जब किसी ने मेरे दुःख को रंच मात्र समझा तो मैं अपने आपको कुछ हल्का कर पाऊँगी, कुछ तो मुझे संतोष होगा कि मैंने जो किया वह इतना अनुचित नहीं था, जो किया वह जनहित विश्वहित में किया। इति।

नर्सरी से इण्टर तक पंजीकरण/प्रवेश सभी कक्षाओं हेतु प्रारम्भ

सा विद्या या विमुक्तये
माध्यमिक शिक्षा परिषद उ०प्र० द्वारा मान्यता प्राप्त

गौरवशाली तीस वर्ष

दयानन्द इण्टर कालेज, इन्दिरा नगर, लखनऊ

विद्यालय वैशिष्ट्य

- नर्सरी से इण्टरमीडिएट तक मानविकी, वैज्ञानिक, वाणिज्य वर्गों में सह–शिक्षण की उत्तम व्यवस्था
- शत प्रतिशत परीक्षा– फल, अनुशासन एवं भारतीय संस्कारों का अभिनव केन्द्र।
- ज्ञानार्जन हेतु समृद्ध पुस्तकालय की व्यवस्था।
- गृह विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर की सुसज्जित स्तरीय प्रयोगशालाएँ।
- खेल–कूद, रेडक्रास, स्काउट–गाइड, राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से बालक–बालिकाओं के सर्वांगीण विकास की पूरी व्यवस्था।
- नैतिक मूल्यों के संवर्धन की पूर्ण व्यवस्था के साथ Spoken English क अभ्यास की पूर्ण व्यवस्था।
- स्वास्थ्य, आवागमन/ यातायात की समुचित व्यवस्था।
- योग्य, अनुभवी, कर्मठ शिक्षक/ शिक्षिकाओं द्वारा ही सभी कार्य सम्पन्न किये जाते है।

रामउजागिर शुक्ल
प्रधानाचार्य

अन्य संस्थाएँ

1– श्रीमती उमा शुक्ला कन्या विद्यालय, जियामऊ, लखनऊ।
2– जगपती शीतला प्रसाद ट्रेनिग कालेज, (बी.टी.सी.) सुल्तानपुर।
3– रामखेलावन मेमोरियल, डिग्री कालेज, सुल्तानपुर।
4– रामखेलावन मेमोरियल पब्लिक स्कूल, सुल्तानपुर।

सुभाष श्रीवास्तव
अध्यक्ष

प्रवेश फार्म उपलब्ध यथा शीघ्र सम्पर्क करें

काश! वह यहाँ होते

– श्रीमती नीरजा द्विवेदी

किसी विवाह के तुरंत बाद, विवाहस्थल से ही वर परदेश चला जाए, बारात वापस के रास्ते में हों और वधू पहले ही ससुराल पहुँच जाए–ऐसा न कभी देखा था न सुना, परन्तु मेरे साथ ऐसा ही हुआ। विवाह संपन्न होते ही विवाह–मंडप से दूल्हा जी को विभागीय परीक्षा के लिए अर्द्धरात्रि मे प्रस्थान करना पड़ा। अगले ही दिन प्रातः पाँच बजे बाबाआदम के काल की बस में चली बारात बस की खराबी के कारण सूरज ढलने के पश्चात् ही गाँव पहुँची और मैं दुल्हन के वेश में, बदायूँ से कार से चलकर इटावा अब (औरैया) के 'मानीकोठी' नामक ग्राम में प्रातः साढ़े दस बजे ही पहुँची। बारात को विदा करने के दो घंटे के पश्चात् मेरी कार चली थी, पर रास्ते में कहीं भी बारात वाली बस का अता–पता रहीं था। मैंने सोचा, बारात पहुँच चुकी होगी, परन्तु मानी कोठी ग्राम पहुँच कर ज्ञात हुआ कि न तो बारात पहुँची है, न ही गाजा बाजा। मैं अकेली कार में अपने भाई के साथ बैठी थी। 'नकटा' की रस्म के लिए नाच–गाकर, रात्रि– जागरण कर, घर की महिलाएँ भोर के समय सोई थीं और कुछ समय पूर्व ही जागकर नित्य–क्रियाओं में निमग्न थीं। थोड़े देर में शोर मच गया–'बहू आ गई' 'बहू आ गई'। शीघ्र ही सारे गाँव में हड़कंप मच गया और लड़के–लड़कियों का झुंड 'हो' –'हो' करता, कार को चारों ओर से घेरकर खड़ा हो गया। बड़ा बड़ा काजल लगाए, गहरे नीले कुर्ते या फ्राक और पटरे के चौड़ी पट्टीदार पाजामे पहने लड़कियाँ एवं सिर में ढेर सा कड़वा तेल चुपड़े, गहरी नीली कमीज और पटरे के नेकर या पाजामा पहने लड़के 'शहर की पढ़ी लिखी व बड़के घर की लड़की' अगवानी के लिए विशेष रूप से सज्जित होकर आए थे। ग्राम की कुछ स्त्रियाँ, जो अधिकतर एक धोती मात्र पहने थीं, अपने घरों के दरवाजे खोलकर बाहर झाँकने लगीं।

'जिज्जी! जरा आरती की थाली सजा लेना, मैं अभी आती हूँ। सास ने गुसलखाने के अंदर से आवाज लगाई। तब तक तइया सास (ताई) ने अपनी बड़ी बहू को आवाज लगाकर कहा –'अभी बारात तो आई नहीं, भला बहू का परछन कैसे हो पायेगा ?'

बड़ी बहू ने पुनः आवाज लागाकर चचिया सास से पूछा–'चाची ! बारात तो आई नही है, ऐसे मे बहू का क्या हो? परछन के बिना वह घर में कैसे पैर रख सकती है?'

इस समस्या का निदान निकाला गया कि छत पर बने कमरे में बहू को बिठाया जाए। बिजलीविहीन गाँव में, 16 जून की भयंकर गर्मी में, तपती दोपहर की तेज लू में, टीन की छत के नीचे, दुल्हन की भारी साड़ी पहने मैं थी और मेरे चारों ओर से मुझे घेरे हुए, एकटक मुझे घूरते हुए, मुझे जू में बंद जानवर की अनुभूति कराते हुए अनेक बच्चे और स्त्रियाँ थीं। उस वातावरण में घूँघट मुझे किसी वरदान से कम नही लगा।

'बहू खीर खा लो। परछन से पहले खाना नहीं मिलेगा।' आग्रह करते हुए मेरी जिठानी ने बड़े लाड़ से एक बेले में खीर भरकर मुझे दी। दर्जनों आँखे मेरे मुख पर केंद्रित हों और अकेले मुझे खाना हो, यह मेरे बस की बात नहीं थी। एक चम्मच शगुन की खीर–खाकर और पानी पी कर मैंने बेला यह सोचकर अपने समीप रखना चाहा कि बाद में एकांत होने पर खीर खा लूँगी कि इतने में एक बच्ची ने बेला पकड़ा और 'सुड़क' करते सारी खीर साफ कर दी। पर्स में माँ के बनाये आलू के पराठे लपेटकर रक्खे थे, पर नसीब में होते तब न। एक शैतान बच्चे ने झपटकर मेरा पर्स उठाया और जब तक मैं समझ पाती, पर्स खोलकर–

'यह क्या है?' और पराठे उसके हाथ में थे– 'चाची! ये मैं खा लूँ? पूछने के पहले ही पराठे को मुँह में भरते हुए उसने पुछा। उस दिन मैंने जाना कि अंतड़ियाँ भूख से कैसे कुलबुलाती हैं।

मोटी दरी पर, जमीन पर बैठे–बैठे पीठ अकड़ गई। घूँघट में गर्मी के कारण पसीना बह रहा था। उस दिन 'एड़ी से चोटी तक' मुहावरे की उत्पत्ति का राज खुला। यदि पसीना बहाने कि प्रक्रिया की निरंतरता न बनी रहती तो अपने नीचे से होते जल–प्रवाहन का स्पष्टीकरण देना संभव न होता। भगीरथ तपस्या के उपरांत, सायं सात बजे 'बारात आ गई' का शोर सुनाई दिया। स्नान–ध्यान के उपरांत घंटे भर पंडित जी प्रकट हुए। लड़की के एक पटेपर पति का पटुका रखकर, मेरी चादर से गठजोड़ करके 'परछन' की रस्म पूरी की गई। अब आई मुँह दिखौनी की रस्म की बारी। प्रातः पाँच बजे की नहाई, यात्रा करके आई, दिन भर पसीने से नहाई, उस समय मेरी छवि क्या रही होगी, सोचकर भी सिहरन होती है– पसीने छितराए बाल,

उलझी चोटी, भीगी–गुजली साड़ी, धूल से भरा चेहरा, पसीने से बहकर माथे की जगह गाल पर लगी बिंदी, ईश्वर को धन्यवाद है कि वहाँ बिजली नहीं थी।

'दुल्हिन तुम्हार बाप तुम्हें का–का दओ है ?' मेरे हाथ के सोने के कंगन को छूकर, मन–ही–मन उनका वजन आँकते हुए, गोरी सी दुबली–पतली, लंबी, पड़ोस की अइया (दादी) ने झापड़ –सा मारा ।

मैं इस अप्रत्याशित प्रश्न के लिए प्रस्तुत नहीं थी, अचकचा कर स्तब्ध–सी रह गई कि तुरंत ही मेरी सास, जो अइया के स्वभाव से परिचित थीं, मुझे प्यार से थपकाते हुए बोलीं–

'लड़की दिन भर गर्मी में तप गई। इसे जल्दी से खिला–पिला कर छत पर ले जाओ।' यह कहकर वह अइया की ओर उन्मुख होकर बोलीं–

'जिसने अपनी बिटिया दी, उसने तो सब कुछ दिया है।' उनके स्नेह–कवच से रक्षित मैं भाव–विह्वल होकर अपने सारे कष्ट भूल गई। शीघ्र ही नहा–धोकर, खा–पीकर मैं छत पर पहुँचा दी गई।

अब खुली छत पर, स्निग्ध रात्रि में नहाई प्रकृति, गाँव और नहर, बाग में रह–रहकर बोलते मोर, आकाशगंगा, सप्तर्षि, ध्रुवतारा, उल्कापात, श्वेत बगुलों के उड़ते पंक्तिबद्ध झुंड कितने सुंदर प्रतीत हो रहे थे। ठंडी, शीतल वायु ने तन–मन की पीड़, थकान और ताप हर लिया। चाँद के ऊपर झीना आवरण का घूँघट डालती एक घटा पवन वेग के साथ आगे बढ़ गई। कितना मनोरम वातावरण था ? मन चुपके बोल उठा–'काश! वह यहाँ होते।'

RATE LIST OF ADVERTISEMENT

IN MAGAZINE

KANYA- KUBJ VAANI

Full page Colored	Rs. 5000/-
Half page Colored	Rs. 3000/-
Full Page Black & white	Rs. 3000/-
Half page Black & white	Rs. 1500/-

Cheque should be in name of 'Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja'

Pratinidhi Sabha Lucknow.

(A/c. No.710601010023908, IFSC Code- VJB0007106,

Vijaya bank, Hazratganj branch Lucknow).

C.V. NETRALAYA

Viram Khand-2, Gomti Nagar,

Lucknow

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon

Dr. V. K. Mishra

बड़ों के पत्राचार

(पं. राजेन्द्र कुमार मिश्र, 'मानभाई' को तत्कालीन जिला जज, रायबरेली का लिखा पत्र)

आदरणीय राजेन्द्र जी,
सादर नमस्कार।

क्षमा करे, बगैर किसी पूर्व परिचय के आपको पत्र भेजने का साहस कर रहा हूँ, कारण यह है कि आपके लेखन चिन्तन ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है वर्षों से ''काँटे की बात'' के रूप में संकलित आपके लेख मस्तिष्क के लिये सुस्वादिष्ट खाद्य बन गये है।

परन्तु राजेन्द्र जी, आपसे मिलकर आपसे वार्तालाप करने की हृदय में बहुत इच्छा थी, जो कि पूरी होने की सम्भवना निकट भविष्य में नहीं हो पा रही है अतः पत्र के माध्यम से कुछ बात रखने की धृष्टता कर रहा हूँ।

मैं आपके विचारो से पूर्णतः सहमत हूँ कि आज की हिन्दू धार्मिकता पतन की निम्न सीढ़ी पर उतर चुकी है और जिसका दायित्व, मूल रूप से, पण्डित पुरोहित ब्राह्मण वर्ग पर है जिन्होंने अपने आर्थिक लाभ एवं समाज में वर्चस्व स्थापित करने हेतु धर्म को व्यवसायिक स्वरूप प्रदान किया है। व्यक्तिगत रूप से मैं स्वयं जिन–जिन मन्दिरों में गया, बहुत कम स्थान अपवाद हैं, अन्यथा मेरे विवाद हर पुजारी, पण्डित से उनके दुष्कर्मों को देखकर हुआ है। यह निर्विवाद सत्य है कि धर्म को व्यवसाय बनाया हुआ है। यह ईश्वर को एक GOD FATHER अथवा पाप करने की LICENSING AUTHORITY बना दिया है जो हर मंगल को प्रसाद चढ़ावे के रुप में LICENSING FEE प्राप्त कर एक सप्ताह तक कुछ भी करने की छूट देते है और स्वयं सुरक्षा अधिकारी बन सही गलत हर प्रकार के कर्मों को सुरक्षा कवच प्रदान करता है।

परन्तु राजेन्द्र जी, विचार करें वैदिक चिन्तन तथा वैदिक मानसिकता के विषय में ।

मैं कोई श्रेष्ठता का दावा किये बगैर आपसे विचार करने का आग्रह करता हूँ।

मानव चेतना के प्रारम्भिक काल में हिन्दू मानस ने कहा था ''ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्'' जगत् में जो कुछ भी है सब में ईश्वर है। उपरोक्त मानसिकता मूल सिद्धान्त पर आधारित थी कि ''यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे''। जब हिन्दू मानस ने यह सूत्र रखा कि ''यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे'' उस समय आज के विद्वान् विचारकों के पूर्वज भिन्न–भिन्न देशो में किस मानसिक स्तर पर थे। परन्तु जब उन्होने मानसिक प्रगति प्राप्त की DALTONS

THEORY प्रतिपादित हुई, विश्व के प्रत्येक तत्व के अणुओं में एक स्वरूप देखा गया जो कि ब्रह्माण्ड में विचरित विभिन्न ग्रहों का स्वरूप है, आज सम्पूर्ण विश्व ''यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे'' के सिद्धान्त को मानने के लिये बाध्य है।

उपनिषदों ने उद्घोषित किया ''एकोऽहं द्वितीयोनास्ति''। निराकार अद्वैत का सिद्धान्त सभी धर्म, सभी विचारक कुछ सीमाओं तक मानते रहे परन्तु भौतिक बोधता के फलस्वरूप पदार्थ और शक्ति में अन्तर बना रहा, द्वैत रहा परन्तु विज्ञान ने प्रगति की $E=mc^2$ का वैज्ञानिक सूत्र प्रतिपादित हुआ सारे द्वैत मिट गये। ''एकोऽहं द्वितीयोनास्ति'' सम्पूर्ण विश्व में स्थिर सिद्धान्त मान लिया। इसी अनुक्रम में हिन्दू मनीषियों ने माना था ''एको देव बहुधा कल्पयन्ति'' ईश्वर एक है विभिन्न देवताओ की कल्पना की गयी है। ''एको सद्विप्रो बहुधा वदन्ति'' मार्ग एक है बताये बहुत से गये वाणी स्वरूप प्रतिपादित किया था जिससे सहज मानव धर्म स्वतः स्थिर होता है।

विभिन्न प्रकार वेश, काल, धर्मो ने यह स्वीकार किया कि सम्पूर्ण सृष्टि ईश्वर का CREATION है, वेदों ने माना समस्त सृष्टि ईश्वर का PROJECTION है, उसी का विभिन्न रुपो में प्रक्षेपण है। विचारणीय है कि क्या यहाँ हम गलत थे।

सम्पूर्ण विश्व को ईश्वर का प्रक्षेपण मानकर पुराणों की रचना हुई तथा विभिन्न मानव रूपों, वनस्पति, पशु–पक्षियों को ईश्वर का रूप देने हेतु काल्पनिक कथायें गढ़ी गयीं। यह कथायें काल्पनिक हैं, इसमें सन्देह नहीं है।

आदरणीय राजेन्द्र जी, काल्पनिक कथाओं के माध्यम से जो सन्देश दिये गये जो प्रतीक स्थिर किये गये कृपया उन पर कुछ पर विचार करें।

हरिश्चन्द्र तारामती की कथा कपोल कल्पित है परन्तु एक डोम के द्वारा मानवता का, SENSE OF DUTY का जो सन्देश दिया गया है उस पर विचार करें– पति के सामने पत्नी मृत युवा पुत्र के शव को लेकर खड़ी है परन्तु पति शव जलाने नहीं दे रहा है क्योंकि पत्नी के पास राजकीय शुल्क अदा करने की सामर्थ्य नहीं है, एक मात्र वस्त्र जो पत्नी पहने हुये है उसे आधा फाड़कर शुल्क के रूप में लेने पर ही शव का दाह संस्कार करने की अनुमति पिता देता है। शासन के प्रति कर्तव्य परायणता का ऐसा उदाहरण विश्व में कदाचित् ही कहीं कल्पित हो।

महाभारत के एक दृश्य पर विचार करें– भीष्म पितामह शरशय्या पर लेटे हैं, प्रश्न उठा आज उन्हें शरशय्या पर लेटने का कष्ट क्यों भोगना पड़ रहा है? उन्होंने तो जीवन पर्यन्त कोई पाप नहीं किया है, न ही पूर्व जन्मों में पाप किया था।

खोज करने पर ज्ञात हुआ 101 जन्म पूर्व उन्होंने अश्वशाला में चारा घोटाला काण्ड किया था। अतिशयोक्तिदोष से पीड़ित होने पर भी यह उदाहरण एक अर्न्तनिहित संदेश देता है कि पाप कर्म करने पर भोगना

अवश्य पड़ेगा चाहे कितने जन्म बीत जायें, कि कितना समय बीत जाये।

समस्त सृष्टि को ईश्वर का प्रक्षेपण मान कर हमारी संस्कृति में प्रतीकों का अत्यधिक महत्व बढ़ा है। विचार करें–एक महिला गंगा स्नान कर सिन्दूर अपनी मांग में भरती हैं वहीं सिन्दूर धरती पर चौराहे पर लगाती है रास्ते पर, गाय पर लगाती है पीपल के पेड़ पर चढ़ाती है। क्या यह सब अन्ध विश्वास है ? एक भावना एक प्रतीक है। सिन्दूर केवल सधवा स्त्री ही लगाती है। पृथ्वी, वृक्ष, गाय प्रकृति के विभिन्न रूप हैं। प्रकृति के प्रति परमेश्वर के जीवन्त होने का संकेत है। प्रकृति के विभिन्न रूपों पर सिन्दूर लगाकर हिन्दू महिला सदियों से परमेश्वर की मंगल कामना करती चली आ रही है, आज हम अन्तर्निहित दर्शन भूल गये हैं, जिससे हमारे आचरण अन्धविश्वास पूर्ण हास्यास्पद लग रहे हैं।

हिन्दू विचारधारा ने ''एको देव बहुधा कल्पयन्ति'' पर आधारित अनेक देवताओं का निर्माण किया। एक चरित्र पर विचार करें जो विश्व के सब से घृणित पदार्थ चिता की भस्म को प्रसाधन मानकर पूरे शरीर पर लपेटे है, भुजंग जिसे देखकर हमारी साँस रुकती है उसके गले में शोभायमान है, भूत पिशाच बैताल समाज का सबसे बदनाम तबका उसके सहयोगी एवं मित्र है।

परन्तु लोक कल्याण के सभी अवसरो पर यह चरित्र सबसे आगे आता है, समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृत, ऐरावत, लक्ष्मी दूसरों के लिये छोड़कर विषपान शिव करते हैं, समाज के हित को जन कल्याण हेतु स्वीकार करते हैं। पुनः प्रतीक पर गौर करें–विष कण्ठ से नीचे नही उतारते हैं, विष आत्मसात नही हो रहा है। गंगा को पृथ्वी पर लाना है, सारी योजनाऐं असफल है शिव अपनी जटा खोल देते है गंगा कितने वेग से गिरे वह अपने सर पर झेलेंगे। ईश्वर का यह रूप जनकल्याण हेतु कोई भी कष्ट सहने को तैयार है। ऐसे साम्यवादी चरित्र की कल्पना कदाचित कार्लमार्क्स ने भी न की होगी।

आज हिन्दू विचार धारा को बहुत संकीर्ण, स्वार्थी मानसिकता कहा जाता है जिसमें कि हर व्यक्ति अपने मोक्ष हेतु कार्यरत होता है। वैसे यह मोक्ष प्राप्त कैसे होगा? अष्टांग योग आप अलग रखें, गीता के अध्याय 13 लोक 30 ''यदा भूत प्रथग्भाव'' के अनुसार जिस क्षण तू (अर्जुन) समस्त जीवों में मुझे देखेगा तथा मेरे द्वारा ही उनका विस्तार जानेगा उसी क्षण तू मोक्ष को प्राप्त करेगा। यहाँ किसी धर्म विशेष के अनुयायी, जाति विशेष, या भौगोलिक सीमाओं में बँधे मनुष्यों अथवा जीवों को इंगित नहीं किया गया है। प्राणी मात्र में ईश्वर को देखने की ओर संकेत किया गया है, लोक कल्याण की दिशा में इससे बड़ा सिद्धान्त क्या होगा।

इसके अतिरिक्त गीता ने क्या प्रतिपादित किया है? यही कि हमारी आज की परिस्थितियाँ पूर्व कर्मों का परिणाम है आगे की परिस्थितियाँ बनाना हमारे सत्कमों पर निर्भर है।

राजेन्द्र जी, गीता कैसा मलहम है यह उन परिवारों से जानिये जहाँ भयानक दुर्घटनायें हुई हो, किसी साहित्य किसी परिकल्पना में सान्त्वना का वह आधार नहीं मिलेगा जो गीता में दिया है– ''जो गया है वह शरीर था आत्मा आज भी अमर है कभी मरती नहीं है।''

ऋग्वेद का एक सूत्र सर्वमान्य है। विचार करें ''आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः'' LET NOBEL THOUGHT COME TO US FROM ALL SOURCES.

हिन्दू वर्ण व्यवस्था के ध्वस्त खण्डहरो को पुनर्स्थापित करना गुरुतर पाप होगा परन्तु हिन्दू मानसिकता के कुछ मोतियों को चुनकर अपनी सांस्कृतिक विरासत के रूप में सजा रखना भी समीचीन होगा। अच्छे विचारों पर किसी भी जाति, देश, जन समुदाय का एकाधिकार नही है।

हिन्दू मानसिकता ने ईश्वर की आराधना विभिन्न प्रकार से की है जिनमें अधिकतर कामना ही कामना है परन्तु एक शाश्वत अपवाद रूप में उदाहरण प्रस्तुत है जिसके द्वारा सार्वभौमिक सत्ता स्वीकारोक्ति प्रस्तुत है। हिन्दू मानस क्या कहता हैः–

''यं शैवा समुपास्ते शिव इति''

(जिसे शैव शिव मानते है और इति यानि पूर्ण कहते है)

''ब्रह्मेति वेदान्तिनो''

(जिसे वेद ब्रह्म कहते है तथा इति मानते है)

''बौद्धः बुद्ध इति प्रमाण पटवः''

(जिसे बौद्ध बुद्ध के रुप में जिसे इति मानते है)

'' कर्तेति नैय्यायिकः''

(नैय्यायिक लोग जिसे कर्ता मानते है)

'' अरहत नित्यथि जैन शासनतः''

(महावीर के रुप में जिसे जैन मानते है)

''कर्मेति मीमांसकः''

(मीमांसक लोग जिसे कर्म में देखते है मानते है– जैसे कि आज के साम्यवादी चिन्तन के पक्षधर)

''सोऽहं ते धातु वांछित फलम त्रैलोक्य नाथो हरिः''

(जो मुझमें, इन सबमें, स्थित है वह तीनों लोक का स्वामी हमें वांछित फल दे)

उपरोक्त रचना से यह भी स्थिर होता है कि हिन्दुत्व एक जीवन दर्शन है कोई धर्म विशेष नही, तथा यह जीवन दर्शन ईश्वर की सार्वभौम सत्ता की स्वीकारोक्ति है।

इसमें कोई विवाद नहीं है कि मनुवादी दुर्व्यवस्था ने सदियों से मानव को असीमित पीड़ा पहुँचायी है परन्तु गीता ने तो केवल दो ही श्रेणी में मानव जाति को माना है। (अध्याय 16 श्लोक 6) दैवतुल्य और आसुरिक।

और यह भेद जन्म से न होकर प्रवृत्तियों के आधार पर किया गया था। श्लोक में कहा है कि पूरे विश्व में केवल यही दो CLASSES है स्पष्ट रूप से कहा है कि यथार्थ ज्ञानी विद्या विनय युक्त ब्राह्मण– (मात्र जन्म से ब्राह्मण नहीं) गाय, हाथी, कुत्ते, चाण्डाल में समदर्शी होते हैं। मोक्ष तभी प्राप्त होगा जब सबमें मुझे देखोगे (अध्याय 13 श्लोक 3)।

संसार के समस्त अनुभवों में मानसिक शान्ति से बढ़कर कोई अनुभव नही है मानसिक शान्ति प्राप्त होगी चिन्ताओं से मुक्ति द्वारा अनादि काल से आज तक जीवन विभिन्न भयों, विभिन्न चिन्ताओं से युक्त रहा है। तनाव से मुक्ति हेतु कोई नींद की गोली का सेवन कर रहा है कोई अफीम का तो कोई मदिरा का।

मैं मैकदे की राह से होकर गुजर गया,
वरना सफर हयात का काफी तवील था

हयात का सफर हर सामाजिक व्यवस्था में दुरूह रहा है। यह सही है हमारे अधिकतर भय काल्पनिक ही रहे हैं। काल्पनिक भयों को ईश्वर की कल्पना ने अनादिकाल से आज तक शक्ति बल, उत्साह और शान्ति प्रदान की है। एक साधारण ग्रामीण बालक अन्धेरे में एकान्त में, ''भूत पिशाच निकट नहि आवें महाबीर जब नाम सुनावें'' जपता हुआ भयमुक्ति अनुभव करता है। किसी भी युग किसी भी परिवेश में मानव मस्तिष्क को भरोसा मिलता है।'' पर जाने भयात् स्वनुसरणम् क्लेश हरणम्'' का चिन्तन करते हुये।

डाक्टर राधाकृष्णन के अनुसार– MAN IS IN CURABLY RELEGIOUS. जिसका कारण स्पष्ट होता है, गांधी जी के अनुसार– COMPLETE SURRENDER IS COMPLETE FREEDOM FROM ALL WORRIES.

कुपोषण से पीड़ित, आर्थिक रूप से जर्जर देशों में मनों दूध चढ़ना और सेरों घी का हवन का औचित्य एक व्यवहारिक प्रश्न चिह्न है परन्तु कर्म काण्ड के विष को अलग कर सारे नियम आडम्बर रहित निष्काम ईश्वर प्रेम एक सुखद रोमांच है जिसको बड़े से बड़े विचारक मानते है। मान्यवर एक स्तोत्र पर विचार करें:–

''आत्मा त्वं गिरिजा मतिः''
(आप (शिव) मेरी आत्मा है गिरिजा मतिः)
'' सहचरः प्राणाः शरीरं ग्रहं''
(प्राण आपके सहचर है मेरा शरीर आपका घर है)
''पूजा ते विषयोपभोग रचना''
(मेरे जीवन की सम्पूर्ण विषयों के उपभोग आपकी पूजा है)
''निद्रा समाधिस्ति''
(मेरी नींद आपके लिये ली गयी समाधि है)
''संसारः प्रद्यो प्रदक्षिण विधि''
(मेरा पूरा चलना दिन भर में आपकी परिदक्षिणा है)

''स्तोत्राणि सर्वागिरौ''

(मेरे द्वारा बोले गये समस्त शब्द आपके ही स्तोत्र है)

''यत्कर्मं करोमि तदखिलम्।

शम्भो तवाराधनम्।।''

(मेरे जो–जो कर्म है उन्हे स्वीकार करें शम्भो अपनी आराधना के रूप में)

जिस क्षण, जिस समय, जिस काल हिन्दू मस्तिष्क ने उपरोक्त भाव श्राद्ध, विश्वास, भक्ति जागृति की थी समस्त पीड़ा समस्त त्रासदी जैसे दूर हो चुकी थी।

मन्दिर, कर्मकाण्ड, जातिवाद, वर्णव्यवस्था से हटकर भी हिन्दू मस्तिष्क ने बहुत कुछ सृजन किया है। यह स्वीकार करते हुये कि– RELIGION IS OPIUM FOR MASSES. यह भी मानना पड़ेगा कि जीवन की दुरूह राहों में, समस्याओं की कड़ी धूप में ईश्वर कृपा के घने साये की कल्पना के अभाव में विभिन्न मानसिक रोगों से ग्रसित हो गया होता।

हर युग, हर समाज, हर परिस्थिति में श्रद्धा विश्वास भक्ति ने चमत्कारों के अभाव में भी मानव मस्तिष्क को अमूल्य शान्ति प्रदान की है।

आपका अमूल्य समय लेने के लिये क्षमा। मैं ईश्वर से आपके सुखमय शतायु होने की मंगल कामना करता हूँ।

आपका शुभचिन्तक
प्रमोद कौशिक
जनपद न्यायालयधीश
रायबरेली
दिनांकः– 30.9.99

बिग्रेडियर शीतांशु मिश्र द्वारा संकलित

**जीवन में सबसे कठिन दौर यह नहीं है,
जब कोई हमें समझता नहीं है!!
बल्कि यह तब होता है जब हम,
अपने आप को नहीं समझ पाते.!!**

How to deal with an Assertive China

- KAILASH NATH MISHRA
BADODARA

Eyeball to eyeball confrontation between India and China is now going on for more than two months in Doclam area of Bhutan. Neither side seems to be willing to yield and back down to avoid further conflict. Though Indian official version is quite restrained, media, particularly electronic one, in ever search for TRP, is speculating all possible scenarios. On Chinese side the tone has been quite belligerent, both in Govt and Govt controlled media, even openly threatening a possibility of war between two countries. It seems, we are in for a long period of tension on our northern & Western borders.

Since Xi Ji Ping became the president, China is becoming increasingly assertive in its relation with all its neighbours, with exception of Russia,. After the death of Mao , he is probably the strongest leader in China. Buoyed by strong trade data, China is now flexing its muscles. Muscles are also getting stronger and more menacing. China's trade in 2015 was 3963.53 Billion Dollars in goods. & 755.44 Billion dollars in services. Its GDP now exceeds 11 Trillion Dollars and expenditure on defence is over 150 Billion Dolloars. Against this our GDP is of 2.5 Trillion Dollars and defence expenditure of under 50 billion dollars; almost five times our GDP & three times our defence budget. Still China's defence budget, is only 1.5% if its GDP, a very low & affordable level. It has plans for rapid expansion of its navy & air force and has already modernised most of its Army.

China, has problems with all its neighbour and most of them have yielded against its aggressive demands. Japan, South Korea, Philipines, Vietnam every one yielded against Chinese demand, therefore Chinese were surprised to see Indian Soldiers in Doclam and quiet resistance by India has infuriated them, hence threats and provocations.

How to deal with such an assertive China. How to overcome current adverse economic strength.

China's core strength lies in its dominance in manufacturing exports, which is over 20% of its GDP. In year 2015 total Goods export if china was USD 2282 Billion while imports were only of USD 1682 Billions. This export of 2282 Billion dollars is what sustains Chinese economy & supports hundreds of million jobs in China. More over, trade surplus of about 600 billion dollars gives China the strength to invest money around the world and buy influence. In 2008, due to global slowdown, there was 30% reduction in exports, resulting in loss of about 20

million jobs. Huge reverse migration of redundant workers from cities to villages created unprecedented unrest and social tension in China.

When we go in details of exports of 2282 billion dollars, we find that 42.30%, or about 1 Trillion Dollar export, is composed of only two product groups; Electrical Machinery & Equipment which is 26.30% & Engineering Machinery which is 16% of total exports. This gives us a tool which may be used to hurt China where it really matters. We should focus to take at least 50% of the market in these two product categories, whatever we have to do, in next 5years. This should not be taken as Commercial venture but as a defence venture. Nothing can be done to put china in its place, better than snatching from them at least 500 billion dollars of export market. Even if we have to make losses to capture such market, it will be cheaper and more effective than any other defence expenditure. If China looses 500 billion dollar export markets to India, it will loose 25-30 million jobs resulting in heavy social unrest in china, and PLA will be busy quelling disturbances by millions of disgruntled retrenched workers all over China. On the other hand, India, shall have those 25-30 million additional jobs, thus ending the clamour for job less growth, rise in corresponding GDP & healthier trade balance.

To achieve this, will shall have to provide all types of initiatives and incentives to industries in these two sectors, One of the most effective incentive is reintroduction of section 80 HHC in income tax act. In late nineties when 80 HHC was introduced, exempting export income from income tax, exports had grown at rapid pace. Nothing enthuses Indian corporates and traders more than prospects of avoiding Income Tax However, our the then Finance Minister Shri Yashwant Sinha, on the flawed logic, that income is income whether earned from overseas market or domestic, removed this provision. With all due respect to Shri Yashwant Sinha Ji, income earned from exports are not same as those earned from imports. When we export, we create jobs which are paid by overseas buyers, when we import, we are paying for overseas jobs. In other words, we import jobs when we export, while we export jobs whenever we import Both incomes are not the same.

Luckily, we have a strong industrial base, though not comparable to China's, in these two product categories. Indian as well as foreign companies in there two segments are already present in India. Company like L&T, BHEL, ECIL, SIEMENS, ABB, AROVA, etc, are already have strong presence in India. We may invite more of them, even Chinese Industry to set shop in India with suitable facilities, support and incentives. We want industries and global market share, who brings it is immaterial.

China, though looks very strong apparently, is quite fragile & vulnerable.

After 2008, when export market shrank, China depended on infrastructure investment to maintain its growth and entire investment was funded by debt, so much so, according to George Soros present debt to GDP ratio in China is over 350%. Though most of the debt is internal, the correction, whenever it comes will create huge problems in China's financial sector. Out of 35 Trillion dollar debt, it is estimated that 30-40% of this debt shall be written off. Even if 6% is taken as cost of servicing this debt, more than 2 Trillion dollars are required. To generate such amount will require a GDP growth of almost 20%. Today, these funds are being serviced by creating additional debt.

India's best chance seams to be to fight china on trade front. Once we win the war on trade front, china will come down from its high pedestal and then we will be in a better position to negotiate. We may then demand status co in Tibet, as it existed before 1950. Ultimately our security lies in getting Tibet real autonomy, thus creating thousands of years old buffer between India & China. After all we have kept Tibetan refugees for more than 60 years and condition has to be created one day for their peaceful return.

शुभकामनाओं सहित :

आयुर्वेद : आयु यानि जीवन, वेद यानि ज्ञान

ममता आयुर्वेदिक एजेन्सीज

एस 6/132, आजाद मार्केट, एच.ए. उल. गेट के सामने,
इन्दिरा नगर, लखनऊ फोन 0522–2344328

उच्च कोटि की आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधियों हेतु पधारें।

वैद्यों के नुस्खे बनाने की सुविधा उपलब्ध है।

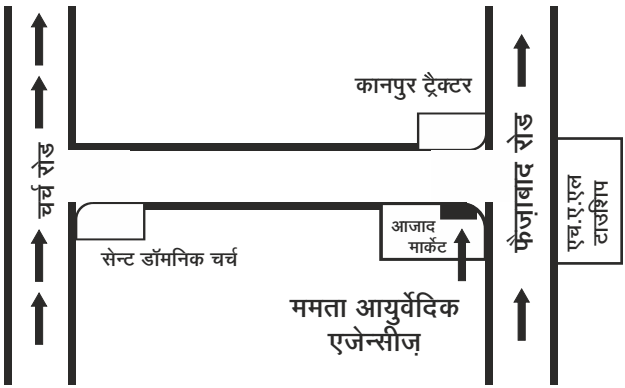

तुम अपनी राह चुनना

सचिन बाजपेयी, अमेरिका

तुम अपनी राह चुनना,
थोड़ा हमसे, थोड़ा जमाने से समझना!
लेकिन अपने दिल की करना,
नित नए समीकरण रचना,
तुम अपनी राह चुनना!

जिंदगी दे जितना, उसको उससे दुगना देना,
हर पल में लेकिन खुल के जीना!
नित नए अनुभव कमाना,
तुम अपनी राह चुनना!

अनुज का अपने हाथ थामे रखना,
मुश्किल में एक दूसरे का सहारा बनना!
हर कोशिश जी जान से करना,
तुम अपनी राह चुनना,
तुम अपनी राह चुनना!

श्रद्धांजली

श्री ब्रह्मानन्द दुबे जी

(जन्म 15 जून 1935 – बैकुंठ गमन 05 अगस्त 2016)

"प्यारे पवनसुत करौं निहोरे तोसे, कर दीजौ एक काम हमारो, मोरी ओर से सीताराम से ,कहियो जाए प्रणाम हमारो ।"

उपरोक्त भावभीनी पंक्तियों के रचयिता श्री ब्रह्मानन्द दुबे जी का जन्म उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक–धार्मिक नगर कान्यकुब्ज (वर्तमान कन्नौज जनपद) में कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में हुआ था। वे अपने माता–पिता श्रीमती रुक्मिणी देवी एवं श्री जगमोहन दुबे की पाँच संतानों में तीसरी संतान थे। श्री दुबे को साहित्य, संगीत एवं चित्रकला में अभिरुचि के साथ साथ सिद्धांतों पर दृढ रहने की संकल्पबद्धता अपने पिताजी एवं परिवार से संस्कारों के रूप में प्राप्त हुई थी। उनके पिता जी न सिर्फ इन तीनों विधाओं में गहरी रुचि रखते थे वरन तत्कालीन मध्य भारत और राजपूताने के नरेशों और सामंतों से उनका निकट का सम्बन्ध था । दूसरी ओर उनके पिता के अग्रज पं0 शिव मोहन दुबे तत्कालीन फर्रूखाबाद जनपद के अग्रणी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में से एक थे और देशभक्ति और दृढ संकल्प शक्ति के प्रतीक थे । यही संस्कार बालक ब्रह्मानन्द के चरित्र में स्वतः ही गहरे पैठ गए और आजीवन उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का अंग बने रहे ।

सांस्कृतिक गतिविधियों में गहरी रुचि रखने वाले श्री दुबे ने अपनी जन्मभूमि कन्नौज में श्री वीणापाणि संगीत अधिष्ठान की स्थापना की जिसके माध्यम से उन्होंने कन्नौज जैसे छोटे जनपद में अनेकों बड़े कलाकारों के कार्यक्रम आयोजित किये। जब वे आजीविका हेतु दिल्ली पहुँचे (वे उत्तर रेलवे में कार्यरत थे) ,तो वहाँ भी उनका संगीत के प्रति अनुराग बना रहा और अपने अग्रज श्री कृष्णानन्द दुबे जी द्वारा स्थापित संस्था इंडियन सेंटर फॉर कल्चरल इंटीग्रेशन के तत्वावधान में उस समय के देश के मूर्धन्य संगीतकारों एवं कलाकारों के कार्यक्रम आयोजित कराये और यह प्रक्रिया वर्ष 2000 तक निरंतर चली।

अपने जीवन के चौथे दशक में उनका झुकाव सर्जनात्मक साहित्य की ओर ज्यादा हो गया।क्या गद्य और क्या ही पद्य साहित्य की हर विधा पर उनकी कलम चली और भरपूर चली। उनके लेखन कार्य के प्रमुख प्रमाण निम्नवत हैं

1. **रस रंग में (१४ जिल्दें)**
2. **संस्मरण**
3. **चिन्तन मन्थन**

अपने सिद्धांतों के पक्के एवं अनन्य मातृभक्त श्री दुबे ने अपनी माता की सेवा का व्रत लिया और इसे पूर्ण करने के लिए आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय न केवल लिया ही वरन उसका आजीवन पालन भी किया। अपने को बेहद साधारण एवं आम जन के रूप में देखने वाले श्री दुबे जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व व्यक्त करते समय मैं उनको अपने श्रद्धा सुमन उन्ही के शब्दों के माध्यम से अर्पित करता हूँ।

करुणानिधान प्रभु जी आपकी अनुकम्पा और मेरा नमन
कृपया स्वीकारें इसे ताकि, मैं अपने को मानूँ एक सौभाग्यशाली जन
अपने भाइयों में मैं इतना योग्य न था, मुझे योग्य बनाया प्रभु जी आपने
मैं ललितकला अनुरागी रहा पर साधनारत रह न सका था,
पर प्रभु को मंजूर फिर भी साहित्यिकी रचनाधर्मी किया मुझे प्रभुजी।
संकोची स्वभाव के कारण साहस का अभाव रहा किंतु,
सिद्धांत पालन का दृढ विश्वास जगाया मुझमें प्रभु जी ने ।
जो भी कर्तव्य धर्म मिला मुझे उसे निभवा दिया प्रभु जी ने ।
क्यों न मानूँ प्रभु जी को अपने, लेखनी आज नहीं रुकती,
उनकी कृपा भरी उर में ।

श्रद्धानवत भातृज

देवेन्द्र नाथ दुबे
आई.ए.एस. (सेवा. नि.)

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for lifemembership of Kanyakubj Sabha &/ or Kanyakubj Vaani magazine

1. Name of Member: .....
2. Age: .....
3. Gotra: .....
4. Father's/Husband's Name :.....
5. Address : .....

   .....
6. landline/Mobile No.: .....
7. Email : .....
8. Name of spouse / Father'sName :.....
9. Education : .....
10. Occupation (Post/Designation) :.....

    Unmarried Children Name Age Education Job

a) .....

b) .....

c) .....

11. Any other information :
    I want to become life member of Akhil Bhartiya Sri Kanyakubj Pratinidhi Sabha &/or Kanyakubj Vaani and Willing to pay Rs.....in Cash/Cheque No. .....Name of Bank.....favouring "Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratindhi Sabha, Lucknow"Payable at Lucknow.

12. Name of person introducing : .....

Date : (Signature)

.....✂.....✂.....✂.....

Reciept

Received with thanks Rs. .....in Cash / Cheque No. .....Name of Bank ..... from .....who wants to become life member of Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinibhi Sabha & / or Kanyakubj Vaani.

(Signature)

1. Contribution for life member of Kanyakubja Sabha is Rs. 500/- (A/c. No. 20036640960, IFSC Code- ALLA0210062 Allahabad Bank Main Branch, Hazratganj, Lucknow). Form With This Cheque To Be Sent To Shri Upendra Mishra 4/53 Vishal Khand Gomti Nagar Lucknow.226010.
2. Contribution for life membership of Kanyakubja Vaani is Rs. 1100/- (A/c. No. 710601010023908, IFSC Code- VJB0007106, Vijaya bank, Hazratganj branch Lucknow). Form & cheque to be sent to Sri AK Tripathi, Haider Mirza Lane, Golaganj Lucknow.
3. Contribution forone issueof Kanyakubja Vaani is Rs.40/-+ postage charges.

नन्ही नृत्यांगनाओं को प्रोत्साहन

पल्लवी त्रिवेदी को 'कान्यकुब्ज रत्न'

मेडिकल कालेज के प्रांगण में रुद्राक्ष का बाल–वृक्ष रोपित करते डा. आर के मिश्रा और उनके सहपाठी

डा. डी एस शुक्ल लिखित कहानी संग्रह 'हंसनी' का विमोचन

Khadi India

मेघदूत

मधुमेह को नियन्त्रित करने की आयुर्वेदिक औषधि

यह औषधि पुराने से पुराने मधुमेह को नियन्त्रित कर अनियमित
रक्तचाप, हृदय दुर्बलता को नियंत्रण कर शरीर को स्फूर्ति प्रदान करता है।

मधुशून्य चूर्ण

आयुर्वेदिक औषधि

1. मधुमेह को नियन्त्रित करने में सहायक।
2. शरीर को नवस्फूर्ति प्रदान करता है।
3. हृदय दुर्बलता को नियन्त्रित करता है।

+91 9235623142 info@meghdootherbal.com /meghdootherbal | www.meghdootherbal.com